TATA STEEL FOUNDATION

TATA

कुँड़ुख़ टाईम्स

https://kurukhtimes.com

वेज वर्जन पत्रिका का त्रैमासिक

मुद्रित संस्करण

(अंक 01, अक्टूबर से दिसम्बर 2021)

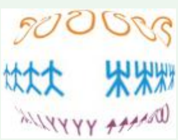

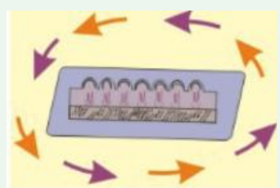

Prepared by :

Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya

Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

In Association with:

TRIBAL CULTURAL SOCIETY, JAMSHEDPUR

An Ethnicity Wing of TATA STEEL FOUNDATION

TATA STEEL FOUNDATION

TATA

Tata Steel Foundation, a wholly owned subsidiary of Tata Steel Limited, was incorporated on August 16, 2016. With over 500 members spread across eleven units and two states of Jharkhand and Odisha, the Foundation is a CSR implementing organization focused upon co-creating solutions, with tribal and excluded communities, to address their development challenges reaching more than 1.5 million lives annually across 4,500 villages. The Foundation endeavors to implement change models that are replicable at a national scale, enabling significant and lasting betterment of communities proximate to Tata Steel's operating locations while embedding a societal perspective in key business decisions. The Foundation strives for excellence by ensuring that all programmes are aligned with community needs and focused upon national priority areas enabling communities to access and control resources to improve the quality of their lives with dignity.

ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी, टाटा स्टील फाउंडेशन के अंतर्गत हाशिये पर पर आ चुके समुदायों विशेषतः अनुसूचित जनजाति के लिए ही कार्यरत इकाई है। यह एक अव्यवसायिक और स्वयंसेवी संगठन है। ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी की यात्रा 1974 में तब से शुरू हुई जबकी इसके जनजातीय मामलों के लिए एक संयुक्त समिति के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 1983 में समिति पंजीयन अधिनियम के तहत इसका एक समिति के रूप में पंजीयन कराया गया। टाटा ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी का मुख्य उद्देश्य जनजाति अस्मिता और धरोहर को प्रोत्साहित करना है। यह जनजातीय जीवन, संस्कृति तथा आजीविका के विभिन्न पक्षों में आर्थिक पहल के जरिए जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन से सम्बद्ध गतिविधियों पर केन्द्रित है।

कार्य के प्रमुख क्षेत्र हैं :–

- जनजातीय समुदायों की देशज अस्मिता या मौलिक पहचान का संरक्षण और संवर्द्धन।
- सशक्त समाजों के निर्माण हेतु शिक्षा को विशेषतः युवाओं के मध्य प्रोत्साहित करना।
- कौशल विकास के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना।

Address:

In association with
TRIBAL CULTURE SOCIETY, JAMSHEDPUR
(An Ethnicity wing of TATA STEEL FOUNDATION)

E. Road Northen Town Bistupur
Jamshedpur - 834001 (Jharkhand)
Contact No. : 918579015646
jiren.topno@tatasteel.com
shiv.kandeyong@tribalculture.org

Printing at : Good News Printer, Kantatoli, Ranchi, Mob : 7631000562

[illegible]

कुँडुख़ टाईम्स

https://kurukhtimes.com

वेब वर्जन पत्रिका का त्रैमासिक मुद्रित संस्करण

(अंक 01, अक्टूबर से दिसम्बर 2021)

Editor & Consultant :
Mr. Kishlaya, Ranchi
Mob. # 9431113111

Assistant Editor :
Shri Rajendra Bhagat, Gumla
Mob # 9798956544

Co-Ordinator :
Dr. Narayan Oraon, Gumla
Mob. # 9771163804

Assistant Co-ordinator :
Shri Bhuneshwar Oraon, Gumla
Mob # 9798956544

Editorial Board :
1. Mr. Mahadeo Toppo, Ranchi
   Mob. # 7250212369
2. Dr. Bindu Pahan, Jamshedpur
   Mob # 9798956544
3. Dr. (Smt.) Shanti Xalxo, Ranchi
   Mob. # 9905215471
4. Dr. Meena Toppo, Ranchi
   Mob # 9431729685
5. Dr. (Smt.) Jyoti Toppo, Ranchi
   Mob. # 9905215471
6. Shri Jita Oraon, Ranchi
   Mob. # 9905215471

Publication Office :
Tolong Chambbi, Boreya Road,
Chirondi, Nagra Dippa, PS: Bariatu,
Dist. : Ranchi, (Jharkhand),
Pin: 834006

Publised by :-
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya
Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

Prepared by :-
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya
Parha Akhra (addi Akhra), Ranchi

In Association with
TRIBAL CULTURAL SOCIETY JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of
TATA STEEL FOUNDATION

तरपाँती	पईत्त पाब		पक्खे
1.	तोलोंग सिकि (लिपि) का आधार (प्रकृति और कलाकृति)	–	01
2.	कुँडुख़ तोलोंग सिकि तोड़पाब (वर्णमाला)	–	02
3.	नई लिपि की परिकल्पना तथा वर्ष 1989 से लिपि विकास का शुभारंभ	–	03
4.	लिपि विकास में दौरान वर्ष 1993 से झारखण्ड आंदोलनकारियों का साथ	–	04
5.	तोलोङ सिकि के बारे में 1993 में पहली बार किसी समाचार पत्र में छपा	–	05
6.	लिपि का तकनीकी विकास हेतु 22 सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम का निर्माण	–	06
7.	जुलाई 1996 में तोलोङ सिकि पर भाषाविद् डा. एक्का का दिशा–निर्देश	–	07
8.	ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि नामक पुस्तक 1997 में छपकर लोगों तक	–	08
9.	तोलोङ सिकि पर आवश्यक संशोधन हेतु डा. मुण्डा का 1997 में सुझाव	–	09
10.	वैज्ञानिक लिपि की कल्पना एवं जून1997 में संशोधित स्वरूप की प्रस्तुति	–	10
11.	नई लिपि, सामाजिक, सांस्कृतिक आधार वाली तथा तकनीकी संगत हो	–	11
12.	बिहार जनजातीय कल्याण षोध संस्थान,राँची में कुँडुख़ पर कार्यशाला	–	12
13.	15 मई 1999 को तोलोंग सिकि को जनमानस के लिए लोकार्पित	–	13
14.	तोलोङ सिकि के संबंध में भाषाविदों एवं शिक्षाविदों के विचार	–	14
15.	तोलोंग सिकि (लिपि) का आधार (प्रकृतिवादी परम्पारिक मान्यता)	–	20

[illegible] (पेंच्छका = संपादकीय)

[illegible] 1996 [illegible] 1997 [illegible]

[illegible] 2020 [illegible] 1 [illegible] 5 [illegible]

[illegible]

[illegible]

- Bindu Pahan, E. Editor

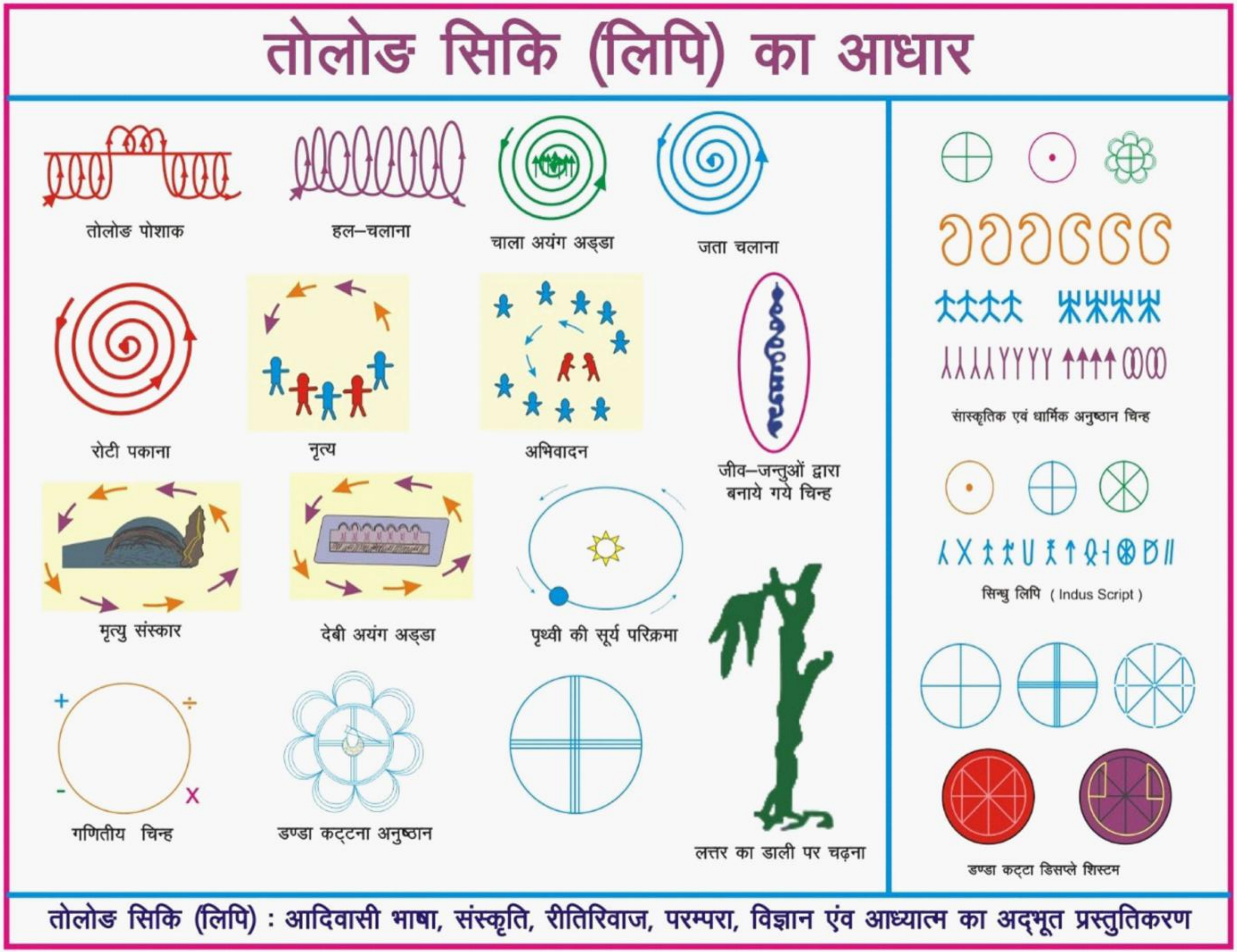
तोलोङ सिकि (लिपि) का आधार
तोलोङ पोशाक
हल–चलाना
चाला अयंग अड्डा
जता चलाना
रोटी पकाना
नृत्य
अभिवादन
जीव–जन्तुओं द्वारा बनाये गये चिन्ह
मृत्यु संस्कार
देबी अयंग अड्डा
पृथ्वी की सूर्य परिक्रमा
गणितीय चिन्ह
डण्डा कट्टना अनुष्ठान
लत्तर का डाली पर चढ़ना
संास्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठान चिन्ह
सिन्धु लिपि (Indus Script)
डण्डा कट्टा डिसप्ले शिस्टम
तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा, विज्ञान एंव आध्यात्म का अद्भूत प्रस्तुतिकरण

(कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि तोःड़पाब)
Tolong Siki Alphabet / तोलोङ सिकि वर्णमाला

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)

इ i — ए e — उ u — ओ o — अ a — आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, • (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ’ (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, । (हेचका) = विकारी अ

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् w	ज़् ż
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, Numerals

[Tolong Siki numerals 0–10]

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

(ख़द्दर ही कत्थ लूर अरा कत्थ बेयाँख़ो) = बच्चों का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान

(पा), (बा), (मा), (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (जा),

(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।

(पल्ले) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = Epiglottis, उप कण्ठ।

(ततख़ा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।

ताःका एमसाःर’ई, पल्ले, बई, मेलख़ा, होलेम चीं:ख़नर ख़द्दर।

ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा नतगी होलेम उज्जनर ख़द्दर।।

(कुडुख़ भाषा, संस्कृति, सामाजिक एवं प्राकृतिक अवदान तथा भाषा, विज्ञान आधारित लिपि)

नई लिपि की परिकल्पना एवं लिपि विकास का इतिहास

1. वर्ष 1989 में जिस समय डॉ0 नारायण उराँव, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में एम.बी.बी.एस. की परीक्षा पास कर इंटर्नशीप कर रहे थे। उनका इंटर्नशीप अवधि फरवरी 1989 से फरवरी 1990 तक था। उस समय उन्होंने आदिवासी समाज के कई सामयिक प्रश्नों के प्रत्युत्तर में एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है – सरना समाज और उसका अस्तित्व। इन्टर्नशीप के दौरान ही उन्होंने वर्ष 1989 में ही उक्त पुस्तक का प्रकाशन करवाया। इस पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन के मध्य नई लिपि की आवश्यकता एवं उपयोगिता महसूस हुई। इस पुस्तक को लिखते समय उनके मन में कई प्रश्न उठे – 1. साधारणतया लोग आदिवासियों को छोटी जाति और कमजोर क्यों समझते है? 2. ऊँची जाति कहलाने वाले लोग कौन हैं और उनकी पहचान क्या है? 3. आदिवासी लोग, मानसिक कुण्ठा का शिकार क्यों हो जाते हैं?

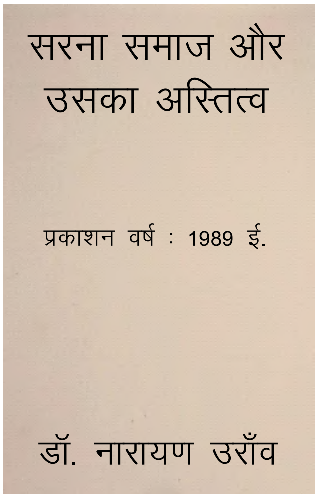

इन ग्रंथियों को दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक था कि आदिवासियों को छोटा समझने वाले लोग कौन हैं और उनकी पहचान क्या है? कहीं, यह सामंतवादी ताकत का असर तो नहीं? दूसरी ओर यह तथ्य है कि आदिवासी समाज के पास अभी भी बहुत सारे ज्ञान भण्डार हैं, जिसे पूरी दुनियाँ को बतलाया नहीं जा सका है। जिस दिन इस ज्ञान उर्जा को संचित एवं विकसित कर विकसित समाज के समक्ष रखा जाएगा, उसी दिन यह हीन ग्रंथि हम सभी से दूर होगी।

इस उधेड़बुन में अस्पताल में कार्य करते हुए उनका ध्यान दो चीजों पर पड़ा –

1. माला डी – गर्भ निरोधक गोली की पर्ची।
2. 100 रूपया का नोट।

(इसमें कई लिपियों में एक ही नाम को अलग–अलग तरीके से लिखा हुआ था। इसे देखकर उनका हृदय रोमांचित हो उठा और सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे आदिवासी भाषा एवं सांस्कृतिक धरोहर को बचाने की कड़ी की माला में एक फूल पिरोने का कार्य आरंभ किया।
ईश्वरीय प्रेरणा से उनको आभास हुआ कि यदि आदिवासियों की भाषा की भी अपनी लिपि होती तो इन पर्चियों में आदिवासियों की भाषा भी दर्ज होती।)

2. श्री भुनेश्वर उराँव, अपने पुत्र डॉ0 नारायण उराँव को कागज–कलम में गोल–मोल तथा टेढ़ी–मेढ़ी लकीर खींचते देखकर बोले – बेटा, एन्देर नना लगदय? ख़ने तंगदस बाःचस – कुँडुख़ कत्था गे लिपि गढ़आ लगदन। तंगदस गही चिहुँटन एःरर तम्मबस मेंज्जस – इबड़न ने बुझुरओ? तम्मबस गही कत्थन मेनर तंगदस किरताचस – नीन टूड़ा–बचआ एकसन सिखिरकय। ख़ने बबस गच्छरस – स्कूल नु सिखिरकन। तम्मबस गही किरताचकन मेनर तंगदस बिड़दाचस – ई लिपि हुँ स्कूल नु पढ़ाई मनो होले ओरमर सिखिरओर का मला! कत्थन बुझुर'अर बबस आःनियस–एन्ने मनी, होले दव कुना नना।

श्रद्धेय भूनेष्वर उराँव (डॉ0 नारायण उराँव के पिता)

3. लिपि विकास में झारखण्ड आंदोलनकारियों का साथ :–

डॉ. नारायण उरॉव 'सैन्दा' स्वर्णरेखा आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची जाया करते थे। 1993 की एक शाम की बात है, डॉ. नारायण, आजसू अध्यक्ष विनोद कुमार भगत से मिलने उनके कमरे पहूँचे। खाना खाने के बाद, दोनों समाज और आन्दोलन के कई गंभीर मुद्दों पर विचार–विमर्श करने लगे। इसी क्रम में विनोद कुमार भगत बोलते–बोलते भावुक हो गये और उनका गला रूंधने लगा। इस पर डॉ. उरॉव ने कहा – आखिर ऐसी कौन सी बात है जो आप रो रहे हैं। आप (आजसू अध्यक्ष) इतने बड़े आन्दोलन का नेता हैं और नेता ही रोये तो आन्दोलन का क्या होगा? इस पर विनोद कुमार भगत के मुख से निकला – आन्दोलनकारी संगठन में, बुद्धिजीवियों की कमी है। हम किनसे कार्य करायें? अगर कल के दिन झारखण्ड बनेगा तो सिस्टम वही रहेगा, जो बिहार में है। यानि मंत्री से लेकर संतरी तक और टेक्नोक्रेट से लेकर व्यूरोक्रेट तक वही पुरानी व्यवस्था रहेगी तो फिर यह आन्दोलन किसके लिए हैं। पढ़ा–लिखा वर्ग तो कहीं भी नौकरी या व्यापार कर लेगा। हमारे गाँव–समाज के लोगों को क्या मिलेगा, जो इस आन्दोलन में जूझ रहे हैं। आदिवासी समाज के पास अपनी भाषा है, संस्कृति है, अपना रीतिरिवाज है। अगर आन्दोलन के माध्यम से यह धरोहर बच जाता है तो हम आन्दोलन को सफल मानेंगे। इसके लिए भाषा को बचाना होगा। भाषा बचेगी तो संस्कृति भी बचेगी और भाषा तभी बचेगी जब भाषा की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक होगी। साथ ही यह भी तथ्य है कि आज के भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी आदिवासी भाषा को बचाने एवं निखारने के लिए अपनी भाषा की लिपि का होना भी आवश्यक है।

फोटो : झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन के दौरान आमरण अनशन पर बैठे लालधारी पट्टी में दायें से डॉ0 देवशरण भगत, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, श्री संजय बसु मल्लिक एवं श्री बिनोद कुमार भगत।

ऑल झारखण्ड स्टूडेन्टस यूनियन (आजसू) के पूर्व अध्यक्ष सह छात्र नेता श्री विनोद कुमार भगत।

4. नई लिपि का नाम तोलोङ सिकि चुने जाने एवं इसे स्थापित किये जाने में डॉ. नारायण उराँव की परिकल्पना को श्रद्धेय डॉ. बहुरा एक्का, श्रद्धेय डॉ. रामदयाल मुण्डा एवं श्रद्धेय डॉ. बासुदेव बेसरा ने अपने उत्कृष्ट विचारों का बहुमुल्य योगदान दिया।

5. तोलोङ सिकि को पहली बार सामाजिक प्रदर्शनी हेतु रखा जाना :–

दिनांक 24 सितम्बर 1993 ई0 को सरना नवयुवक संघ द्वारा आयोजित, करम पूर्व संध्या, के अवसर पर पहली बार जनमानस के अवलोकन हेतु तोलोङ सिकि को राँची कॉलेज, राँची के सभागार में रखा गया।

6. तोलोङ सिकि के बारे में पहली बार किसी समाचार पत्र में छपना :–

हिन्दी दैनिक ‘आज’, दिनांक 07 अक्टुबर 1993 ई0 को *तोलोङ सिकि* के विषय में समाचार पत्र में पहली बार छपा। पत्रकार श्री गिरजा शंकर ओझा द्वारा इस संबंध में विस्तृत समाचार छापा गया।

उरांव जातिकी कुँड़ुख़ लिपिका अविष्कार

छः महीनेके अथक प्रयासका नतीजा

आज (राँची) - 7 अक्टुबर 1993

7. लिपि का तकनीकी मानकीकरण के लिए 22 सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम का निर्माण एवं प्रदर्शन

– दिनांक 18 – 25 फरवरी 1994 तक आयोजित हिजला मेला, दुमका में वर्ष 1993 में निर्मित Dannda Katta Display System (22 Segment Display System) को तथा तोलोङ सिकि (लिपि) को प्रदर्शित किया गया। वहाँ अनेकानेक शिक्षाविद, पदाधिकारी, भाषाविज्ञानी एवं पत्रकार द्वारा कई प्रश्न पूछे गये।

कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न
(कुँड़ुख़ तोलोंग लिपि एवं शब्द रचना)
भाग- १
लेखक :-
डॉ॰ नारायण उराँव 'सैन्दा'
एम॰ बी॰ बी॰ एस. (दरभंगा)
सर्वाधिकार सुरक्षित - लेखक
{ सातवाँ संस्करण }
प्रकाशक - 'सिरासिता प्रकाशन'
मोरहाबादी रोड, करमटोली-
चौक, राँची - 834008
SPONSORED BY :-
TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION (TRACE), RANCHI-8.
Printed by USHA INDUSTRIES, BHAGALPUR (BIHAR)
Rs. 5'00

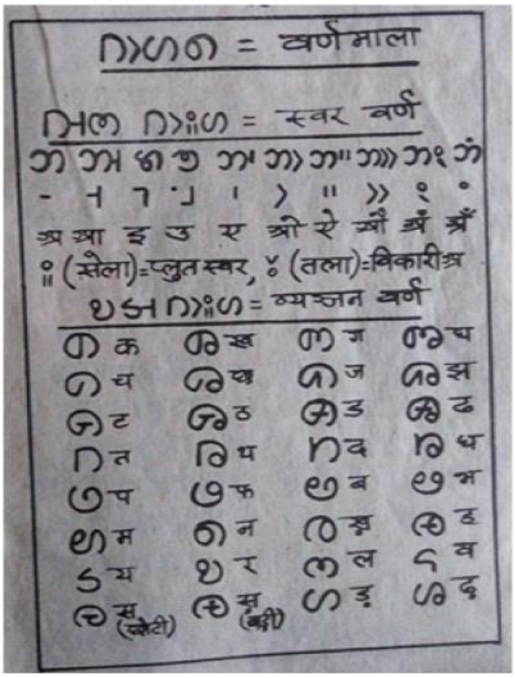

जनवरी 1994 में, उषा इंडस्ट्रीज, भागलपुर से तोलोंग सिकि में प्रथम पुस्तक प्रकाशित करवा कर डॉ. नारायण उराँव द्वारा हिजला मेला दुमका के प्रदर्षनी में प्रस्तुतिकरण।

दिनांक 18–25 फरवरी 1994, हिजला मेला दुमका में तोलोंग सिकि को प्रदर्शित करते हुए डॉ. नारायण उराँव एवं सहयोगी गण। फोटो में उपर, बैंक अधिकारी श्री रामकुमार बेक।

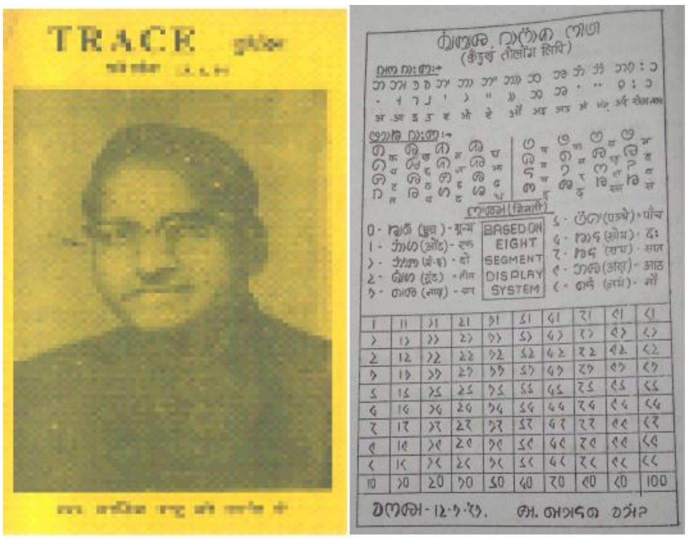

अप्रैल 1994 में, Tribal Research Analysis Communication &Education, Ranchi द्वारा TRACE बुलेटिन जारी हुआ।

8. जुलाई 1996 में तोलोङ सिकि पर भाषाविदों से ध्वनि विज्ञान विषय पर दिशा–निर्देश :–

नई लिपि विकास के क्रम में मैं (डॉ. नारायण उराँव) भाषाविद डॉ0 फ्रांसिस एक्का के साथ बिहार की राजधानी पटना के होटल 'सम्राट' में 27 एवं 28 जुलाई 1996 ई0 को मुलाकात किया। डॉ0 एक्का, ACTION AID नामक संस्था के सेमिनार में आये हुए थे। उनके साथ मैंने कई प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा किया। परिचर्चा के दौरान डॉ0 एक्का के विज्ञान, तकनीकी तथा कम्प्यूटर की बातों में मैं उलझ गया। इसी तरह गाँव–समाज की बातों में डॉ0 एक्का भी उलझ गये। मैंने कहा – आदिवासी समाज अपने सभी नेगचार–अनुष्ठान, संस्कार–संस्कृति आदि घड़ी की विपरीत दिश्शा में सम्मन्न करते हैं। आधुनिक मषीन द्वारा इन बातों को नजर अंदाज किया जाता है। इसलिए नई लिपि संस्कृति आधारित हो। दूसरे दिन, *28 जुलाई* को इन बातों पर फिर नये सिरे से परिचर्चा हुई और प्रकृति विज्ञान आधारित रहस्यों, सामाजिक सह सांस्कृतिक अवदानों एवं भाषा वैज्ञानिक सिद्धातों के आधार पर झारखण्ड आन्दोलन को को देखते हुए डॉ0 एक्का ने सुझाव दिया – दुनियाँ में कोई भी लिपि 100 प्रतिषत सही नहीं है तथा दुनियाँ की सभी लिपियाँ, समाज एवं संस्कृति पर आधारित हैं। मानव, सर्वप्रथम बोलना सीखा, उसके बाद लिखना एवं पढ़ना। वर्तमान परिवेष में आदिवासी समाज को भी अपनी भाषा–संस्कृति को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने हेतु सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली लिपि तैयार करनी होगी। नई लिपि में निम्न प्रकार के गुण होने चाहिए –

डॉ. फ्रांसिस एक्का

(क) नई लिपि, आदिवासी समाज और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला हो।
(ख) नई लिपि, एक ध्वनि, एक संकेत के अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप हो।

(ग) आदिवासी भाषा के सभी मूल ध्वनियों का संकेत चिन्ह हो, संयुक्ताक्षर ध्वनि का नहीं।
(घ) नई लिपि के अक्षर का नाम और ध्वनिमान में समानता हो।

(ङ) International Phonetics Alphabet (IPA) के अनुरूप 6 मूल स्वर पर आधारित हो।

(च) नई लिपि में, लिखने और पढ़ने में समानता होनी चाहिए।

(छ) नई लिपि, लिखने और समझने में आसान तथा सरल हो।
(ज) अक्षर सिखलाने का तरीका आसान से कठिन की ओर होना चाहिए।

(झ) नई लिपि में *phoneme* के लिए ध्वनिचिन्ह होने चाहिए, *allophones* (स्वनिम) के नहीं।

(ञ) नई लिपि, अपने भाषा परिवार के अनुरूप *Sitting Script* समूह के होने चाहिए।

(ट) नई लिपि, वर्णात्मक लिपि हो तथा अधिक से अधिक लिपि चिन्ह का घुमाव दायें से बायें होते हुए दायें की दिशा में बढ़ने वाला हो क्योंकि अधिकतर लोग

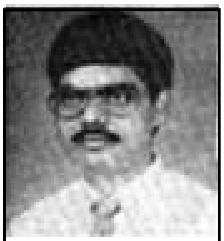

डा. नारायण उराँव

पटना में, वर्ष 1996 में डॉ. एक्का से मुलाकात से पहले मैं कई बार पत्र लिखा तथा व्यक्तिगत रूप से भेंट कर बातचीत करने की इच्छा प्रकट की। इसी क्रम में मैं सितम्बर 1994 में एक पत्र लिखा जो उन्हें 30.09.1994 को मिला। इस पत्र के उत्तर में उन्होंने सुझाव दिया कि मैं पटना या राँची आने पर खबर कर दूँगा। 13 जनवरी 1995 को लिखा गया उनका पहला पत्र प्राप्त हुआ। इसी तरह जानकारी मिली कि वे पटना आ रहे हैं। तब मैं पटना जाकर मिला और लिपि विकास में उठ रही समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्षन प्राप्त किया। डॉ0 एक्का ने सुझाव दिया कि – मैं International Phonetic Alphabet के सिद्धांत पर कार्य करूँ। दिनांक : 28.07.1996 – डॉ0 नारायण उराँव

9. भाषाविदों द्वारा दिए गए सुझाव एवं भाषा विज्ञान के तथ्यों पर आधारित आम जनों को आसानी से समझा पाने योग्य बातों के अनुसार डॉ. नारायण उराँव द्वारा ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि नामक पुस्तक लिखा गया और उसे 1997 के आरंभ में छपवाकर समाज के लोगों तक पहूँचाया गया।

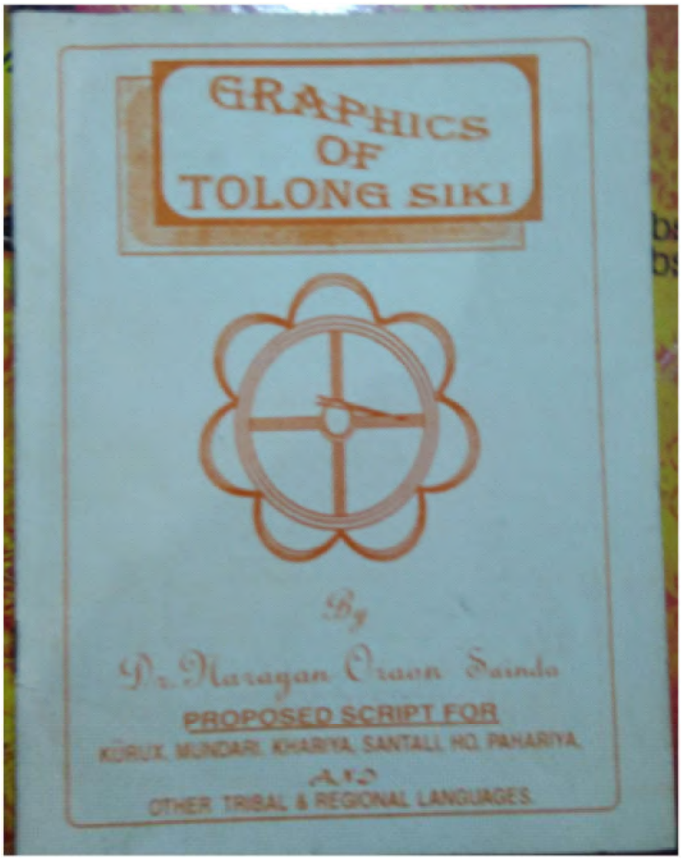

11. नई लिपि के प्रतिष्ठापन में डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ. बहुरा एक्का, डॉ0 बासुदेव बेसरा, फा0 प्रताप टोप्पो आदि ने सुझाव दिया कि हृस्व ध्वनि एवं लम्बी ध्वनि के लिए अलग–अलग चिह्न न रखे जाएँ, जिससे इसे समझने तथा समझाने में देवनागरी की तरह मस्तिस्क में खींचाव होने से बचा जा सके। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान या International Phonetic Alphabet (IPA) के तरीके को अपनाया गया, जहाँ उपविराम का प्रयोग लम्बी ध्वनि के लिए होता है। देवनागरी लिपि में – अ इ उ तीन मूल स्वर है, जबकि ए ऐ ओ औ संयुक्त स्वर है। कुँड़ुख़ भाषा में (सभी 6 स्वर) मूल स्वर है। इस तरह कुँड़ुख़ भाषा की ध्वनि (अर्थात ए ओ आ) के लिए देवनागरी लिपि में अलग से ध्वनि चिन्ह नहीं हैं। साथ ही कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित ध्वनि को देवनागरी लिपि से ड़ ढ़ ख़ ज़ ञ़ (अर्थात देवनागरी के वर्णों के साथ तल विन्दु देकर) के लिए अलग से लिपि चिन्ह नहीं है, परन्तु इसे तल विन्दु देकर लिखा जाता है तथा कुँड़ुख़ के सभी स्वर वर्णों का लम्बी ध्वनि रूप होता है, जिसे IPA का Colon चिन्ह से निर्देशित किया जाता है।

10. ग्राफ्रिक्स ऑफ तोलोङ सिकि का लोकार्पण एवं आवश्यक संशोधन हेतु मार्गदर्शन :–

डॉ0 नारायण उराँव द्वारा वर्ष 1997 में एक पुस्तक की रचना की गई, जिसका नाम – Graphics of Tolong Siki रखा गया। इसे सामाजिक सहयोग से छपवाया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण दिनांक 05.05.1997 को राँची विश्वविद्यालय, राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में हिन्दी दैनिक, प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक श्री हरिवंश जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह में श्री हरिवंश जी ने कहा – वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में पूरे विश्व में, भाषाएँ सिमटती जा रही हैं। आकलन है कि विष्व में लगभग 16000 हजार भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो इस सदी के अंत तक मात्र 6000 हजार रह जायेंगी। यह, समस्त मानव जाति के लिए घोर संकट का विषय है। आज का यह समारोह भाषा बचाने के कार्य के रूप में इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा। इस लिपि की प्रस्तुति पर डॉ0 बी0 पी0 केसरी को छोड़कर सभी सहमत हुए। डॉ0 बी0 पी0 केसरी ने कहा – एखन दुनियाँ, चांद में पोंहईंच गेलक, लकिन ई जगे आदिवासी मन कबिला–कबिला कर बात करेक लाइग हँय। अब आदिवासी मनके देश कर मुख्य धारा से जुड़ेक चाही। उसके बाद, मुख्य वक्ता डॉ0 रामदयाल मुण्डा द्वारा पुस्तक में, हिन्दी वर्णमाला के आधार पर प्रस्तुत किये गये तरीके में बदलाव करने तथा सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली तथा भाषा वैज्ञानिक तथ्यों वाली प्रस्तुति करने का सुझाव दिया गया। डॉ0 मुण्डा ने कहा – एखन कर बेरा में आदिवासी मन के देश कर मुख्य धारा संगे जुड़के चाही, संगे–संगे आपन सांस्कृतिक विरासत के बचायक ले भी तेयारी करेक चाही। अब, आदिवासी मन के, हिन्दी आउर अंगरेजी विषय कर पढ़ाई संगे पुस्तैनी बिरासत के बचाय ले मातृभाषा में पढ़ेक–लिखेक भी आवश्यक होवी। ई पुस्तक में, राष्ट्रीय एकता रूपी गुलदस्ता में, आपन सांस्कृतिक धरोहर रूपी गुलैची आउर गेंदा फूल के चिन्हेक, चुनेक आउर जोगाएक कर काम, डॉ0 नारायण उराँव शुरू कइर हँय। इकर ले उनके आउर उनकर पूरा टीम के बहुत–बहुत बधाई। नया लिपि में ई लेखे गुन होवेक चाही –

(क) नया लिपि, एक ध्वनि, एक संकेत कर अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान कर सिद्धांत लेखे होवे।

(ख) आपन भाषा कर सउब मूल ध्वनि ले चिन्ह होवेक चाही। संयुक्त ध्वनि ले लिपि चिन्ह ना होवे।

(ग) अक्षर सिखाएक कर तरीका आसान से कठिन दने जाएक लेखे होवेक चाही।

(घ) नया लिपि, आदिवासी समाज और संस्कृति कर प्रतिनिधित्व करेक चाही।

डॉ0 रामदयाल मुण्डा

आदिवासी मने प्रकृति से सीख के आपन दैनिक जीवन में दायाँ से बायाँ अर्थात वर्तमान घड़ी कर विपरित दिशा में कर्मकांड करयना। ई बात मने भी लिपि चिन्ह में दिखेक चाही।

(ङ) नया लिपि में, लिपि चिनहां कर नाम आउर वनिमान एके लेखे होवेक चाही।

(च) तकनीकी विज्ञान कर अनुरूप चिनहाँ के राखल जाएक चाही। पढ़ेक आउर लिखेक में समानता होवे।

(छ) कम से कम चिनहाँ से अधिक से अधिक ध्वनि कर प्रतिनिधित्व होवे चाही।

(ज) भाषा विज्ञान में कहल जाएला कि छउवा मने ''प वर्गीय'' शब्द से बोलेक शुरू करयना, से ले समाज और सभ्यता कर विकास कर भी बात सामने आवेक चाही।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर नई लिपि में सुधार किये जाने पर उपस्थित सभी लोगों की सहमति बनीं। तोलोंग सिकि लिपि पर परिचर्चा तथा डॉ0 मुण्डा जी के मार्गदर्शन से यह भाषा–लिपि विषय द्रविड़ भाषा परिवार की लिपि के रूप में प्रोत्साहित हुई और कुँडुख़ भाषा की नई लिपि विकास को भाषा विज्ञान का दृष्टिकोण मिला।

– श्रीमती मीना टोप्पो
व्याख्याता, राँची कॉलेज, राँची
दिनोंक : 05.05.1997

11. तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सत्यभारती, रांची में हुई और संशोधित स्वरूप तैयार किया गया। तोलोंग सिकि वर्णमाला निर्धारण में भाषाविद् डॉ0 फ्रांसिस एक्का, भाषाविद् डॉ. रामदयाल मुण्डा तथा भाषाविद् डॉ0 भोलानाथ तिवारी द्वारा की गई व्याख्यान, आधार बनी।

(भाषा विज्ञान : डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृष्ट सं0 466–471 में उद्धृत वैज्ञानिक लिपि के गुण)

वैज्ञानिक लिपि के गुण :– विश्व की कोई भी लिपि सभी दृष्टियों से पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है, किन्तु पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि की की कल्पना की जा सकती है और उसके मुख्य गुण गिनाये जा सकते हैं –

(1) वैज्ञानिक लिपि को वर्णात्मक होना चाहिए, आक्षरिक नहीं। अर्थात, उसके लिपि–चिह्न भाषा में प्रयुक्त हर व्यंजन एवं हर स्वर के लिए अलग–अलग होने चाहिए। उल्लेख है कि नागरी में क, ख, ग आदि व्यंजन चिह्नों में व्यंजन तथा स्वर मिले हुए हैं, अर्थात वह वर्णात्मक नहीं है, आक्षरिक है।
(2) लिपि में भाषा विशेष में प्रयुक्त हर ध्वनि (व्यंजन एवं स्वर) के लिए लिपि चिह्न होने चाहिए। न कम न अधिक। नागरी में दंतोष्ठ्य व के लिए लिपि चिह्न नहीं हैं।
(3) एक चिह्न से केवल एक ध्वनि व्यक्त होनी चाहिए, एकाधिक नहीं। नागरी में व – से कई ध्वनियाँ व्यक्त हैं।
(4) एक ध्वनि के लिए केवल एक लिपि चिह्न होनी चाहिए, एकाधिक नहीं। हिन्दी भाषा की दृष्टि से एक ही ध्वनि के लिए नागरी में रि – ऋ, ष – ष चिह्न हैं।
(5) लेखन एवं लिपि चिह्नों को उसी क्रम में आना चाहिए जिस क्रम में उसका उच्चारण किया जाता है।
(6) दो चिह्नों को एक पढ़े जाने का भ्रम नहीं होना चाहिए। नागरी में है, जैसे – घ–ध, म–भ, रा–ष, ख–रव तथा रा (र् आ) –रा (रा का आधा) आदि में।

इसके अतिरिक्त लेखन, टंकन तथा मुद्रण आदि की व्यवहारिक दृष्टि से भी कई बातें कही जा सकती है।

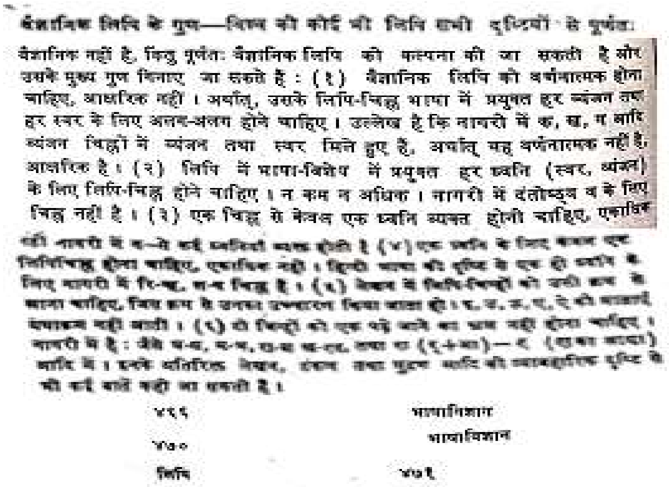
वैज्ञानिक लिपि के गुण—विश्व की कोई भी लिपि सभी दृष्टियों से पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है, किंतु पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि की कल्पना की जा सकती है और उसके मुख्य गुण गिनाए जा सकते हैं : (१) वैज्ञानिक लिपि को वर्णात्मक होना चाहिए, आक्षरिक नहीं। अर्थात्, उसके लिपि-चिह्न भाषा में प्रयुक्त हर व्यंजन तथा हर स्वर के लिए अलग-अलग होने चाहिए। उल्लेख है कि नागरी में क, ख, ग आदि व्यंजन चिह्नों में व्यंजन तथा स्वर मिले हुए हैं, अर्थात् यह वर्णात्मक नहीं है, आक्षरिक है। (२) लिपि में भाषा-विशेष में प्रयुक्त हर ध्वनि (स्वर, व्यंजन) के लिए लिपि-चिह्न होने चाहिए। न कम न अधिक। नागरी में दंतोष्ठ्य व के लिए चिह्न नहीं है। (३) एक चिह्न से केवल एक ध्वनि व्यक्त होनी चाहिए, एकाधिक [illegible]

४६६ भाषाविज्ञान

४७० भाषाविज्ञान

लिपि ४७१

आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि लिपि का संषोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सम्पन्न हुई और संषोधित स्वरूप तैयार किया गया। बैठक में डॉ0 रामदयाल मुण्डा एवं डॉ0 फ्रांसिस एक्का के सुझाव के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप आसान से कठिन की ओर के मानक के आधार पर वर्णमाला स्थापित किया गया, जिसे आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी में सर्व सहमति से स्वीकार कर लिया गया। बैठक सत्यभारती, राँची में हुई।

प्रभात खबर

23 जून 1997, सोमवार

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

संवाददाता

रांची, 22 जून : पुरुलिया रोड स्थित सत्य भारती सभागार में कल 'आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप' विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान जुलियस बा ने की. गोष्ठी का उद्देश्य रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखित 'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह में लिये गये निर्णयों का क्रियान्वयन करना था.

ज्ञातव्य है कि पिछली सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया था कि लिपि का संशोधित स्वरूप निम्न बातों के अनुरूप हो : एक ध्वनि- एक संकेत के सिद्धांत पर आधारित हो, वर्णमाला का निर्धारण सरलता से कठिनता की ओर हो, कम से कम चिन्हों से अधिक से अधिक ध्वनियों को लिखा जा सके, अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाये और आदिवासी भाषा संस्कृति को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया जाये. इसी परिप्रेक्ष्य में लिपि के संशोधित स्वरूप पर इस गोष्ठी में विचार-विमर्श किया गया. गोष्ठी में सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि (लिपि) वर्णमाला का नवीनतम संशोधित स्वरूप तैयार किया गया.

गोष्ठी में लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ नारायण उरांव, रांची विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एवं जनजातीय विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रामदयाल मुंडा, सेवानिवृत्त अपर स्वास्थ्य निदेशक डॉ विश्वनाथ भगत, हीरो सेवा समिति के अध्यक्ष पीएनएस सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप, राजू उरांव, मीना टोप्पो, मंगरा उरांव, विवेकानंद भगत, प्रो नारायण भगत, प्रो राजेश कुजूर, प्रो रामकिशोर भगत, डॉ सुदु उरांव आदि ने अपने विचार रखे और कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. बिशप डॉ निर्मल मिंज ने इस स्वरूप को अंतिम स्वरूप की संज्ञा दी. गोष्ठी में निर्णय लिया गया कि अब इस नवीनतम संशोधित लिपि से साहित्य सृजन किये जायें.

डॉ.एन.उराँव

तोलोंग सिकि का संषोधित वर्णमाला, आदिवासी बुद्धिजीवियों के समक्ष दिनांक 22 जून 1997 को रखा गया। चूँकि बुद्धिजीवियों ने 1989 से अप्रैल 1997 तक के कार्य के तरीके में संशोधन कर ध्वनि विज्ञान सम्मत वर्णमाला का सुझाव दिया। इसलिए डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 फ्रांसिस एक्का तथा डॉ0 भोलानाथ तिवारी के सुझाव अनुसार, ध्वनि विज्ञान आधारित वर्णमाला को सर्व सहमति से सबों द्वारा स्वीकृत हुआ और पठन–पाठन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

12. दिनांक 27–28 जुलाई 1996 तथा दिनांक 05 मई 1997 की बैठक के बाद प्रकाश में आये विन्दुओं पर अग्रेतर कारवाई हेतु दिनांक 22 जून 1997 को सत्यभारती, राँची में एक कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला के निर्णय को केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर को आवश्यक दिशा–निर्देश के लिए दिनांक 21.07.1997 को भेजा गया। इस पत्र का उत्तर दिनांक 27 नवम्बर 1997 को आया।

प्रभात खबर

23 जून 1997, सोमवार

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

संवाददाता

रांची, 22 जून : पुरुलिया रोड स्थित सत्य भारती सभागार में कल 'आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप' विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान जूलियस बा. ने की. गोष्ठी का उद्देश्य रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखित 'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह में लिये गये निर्णयों का क्रियान्वयन करना था.

ज्ञातव्य है कि पिछली सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया था कि लिपि का संशोधित स्वरूप निम्न बातों के अनुरूप हो : एक ध्वनि- एक संकेत के सिद्धांत पर आधारित हो, वर्णमाला का निर्धारण सरलता से कठिनता की ओर हो, कम से कम चिन्हों से अधिक से अधिक ध्वनियों को लिखा जा सके, अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाये और आदिवासी भाषा संस्कृति को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया जाये. इसी परिप्रेक्ष्य में लिपि के संशोधित स्वरूप पर इस गोष्ठी में विचार-विमर्श किया गया. गोष्ठी से सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि (लिपि) वर्णमाला का नवीनतम संशोधित स्वरूप तैयार किया गया.

गोष्ठी में लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ नारायण उरांव, रांची विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एवं जनजातीय विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रामदयाल मुंडा, सेवानिवृत्त अवर स्वास्थ्य निदेशक डॉ विश्वनाथ भगत, होड़ो सेवा समिति के अध्यक्ष पीएनएस सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप, राजू उरांव, मीना टोप्पो, मंगरा उरांव, विवेकानंद भगत, प्रो नारायण भगत, प्रो राजेश कुजूर, प्रो रामकिशोर भगत, डॉ बुदु उरांव आदि ने अपने विचार रखे और कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. बिशप डॉ निर्मल मिंज ने इस स्वरूप को अंतिम स्वरूप की संज्ञा दी. गोष्ठी में निर्णय लिया गया कि अब इस नवीनतम संशोधित लिपि से साहित्य सृजन किये जायें.

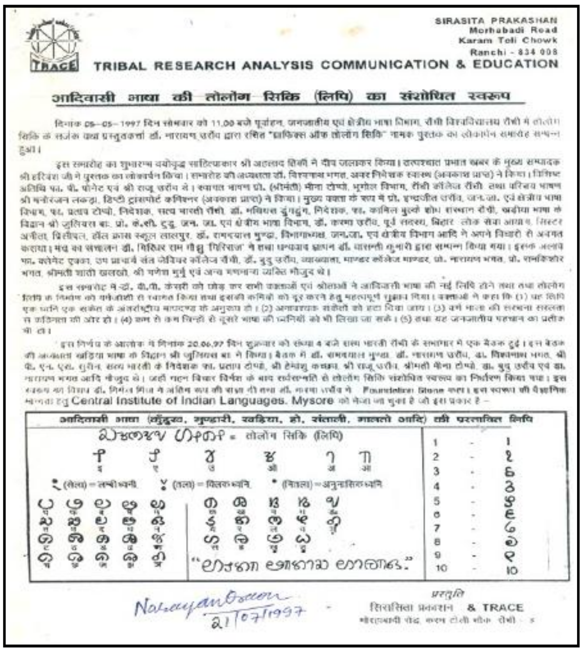

SIRASITA PRAKASHAN
Morhabadi Road
Karam Toli Chowk
Ranchi - 834 008

TRACE — TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप

Narayan Oraon 21/07/1997

प्रस्तुति
सिरासिता प्रकाशन & TRACE

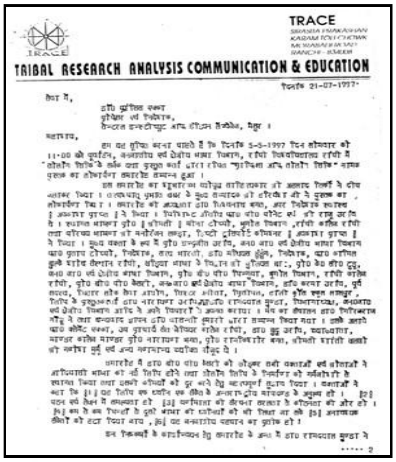

TRACE
SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

दिनांक 21-07-1997

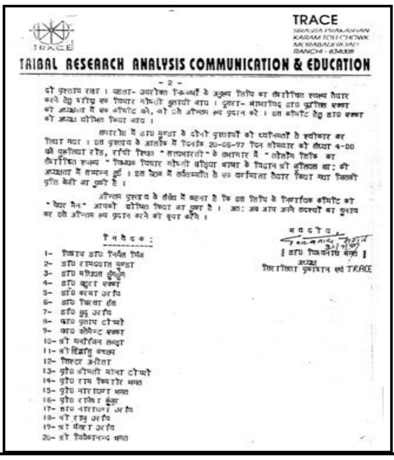

TRACE

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

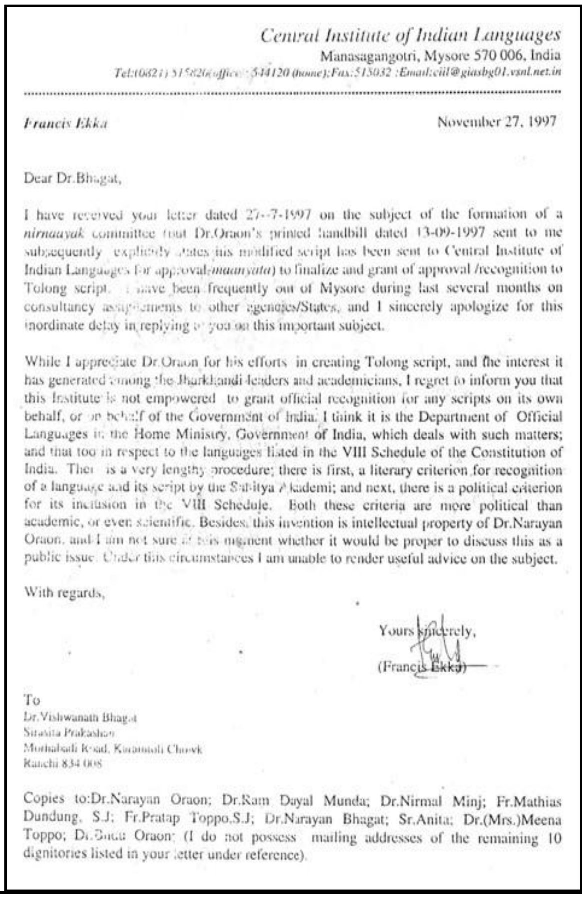

Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore 570 006, India
Tel:(0821) 515820(office); 514120 (home); Fax: 515032 ; Email:ciil@giasbg01.vsnl.net.in

Francis Ekka November 27, 1997

Dear Dr.Bhagat,

I have received your letter dated 27-7-1997 on the subject of the formation of a *nirnaayak* committee (but Dr.Oraon's printed handbill dated 13-09-1997 sent to me subsequently explicitly states his modified script has been sent to Central Institute of Indian Languages for approval-*maanyata*) to finalize and grant of approval /recognition to Tolong script. I have been frequently out of Mysore during last several months on consultancy assignements to other agencies/States, and I sincerely apologize for this inordinate delay in replying to you on this important subject.

While I appreciate Dr.Oraon for his efforts in creating Tolong script, and the interest it has generated among the Jharkhandi leaders and academicians, I regret to inform you that this Institute is not empowered to grant official recognition for any scripts on its own behalf, or on behalf of the Government of India. I think it is the Department of Official Languages in the Home Ministry, Government of India, which deals with such matters; and that too in respect to the languages listed in the VIII Schedule of the Constitution of India. There is a very lengthy procedure; there is first, a literary criterion for recognition of a language and its script by the Sahitya Akademi; and next, there is a political criterion for its inclusion in the VIII Schedule. Both these criteria are more political than academic, or even scientific. Besides, this invention is intellectual property of Dr.Narayan Oraon, and I am not sure at this moment whether it would be proper to discuss this as a public issue. Under this circumstances I am unable to render useful advice on the subject.

With regards,

Yours sincerely,

(Francis Ekka)

To
Dr.Vishwanath Bhagat
Sirasita Prakashan
Morhabadi Road, Karamtoli Chowk
Ranchi 834 008

Copies to:Dr.Narayan Oraon; Dr.Ram Dayal Munda; Dr.Nirmal Minj; Fr.Mathias Dundung, S.J; Fr.Pratap Toppo,S.J; Dr.Narayan Bhagat; Sr.Anita; Dr.(Mrs.)Meena Toppo; Dr.Budu Oraon; (I do not possess mailing addresses of the remaining 10 dignitories listed in your letter under reference).

13. नई लिपि, सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली हो तथा तकनीकी संगत हो

उपरोक्त कथन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर (भारत सरकार) के प्रोफेसर एवं निदेशक डॉ. फ्रांसिस एक्का के हैं। उनका यह वक्तब्य 24 जनवरी 1998 का है। ज्ञात हो कि डॉ. फ्रांसिस एक्का, बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची में आयोजित कार्यशाला में भाग लेने राँची आये हुए थे। जानकारी मिलने पर डॉ. नारायण उराँव ने मुझे भी होटल महाराजा, राँची में डॉ. एक्का से भेंट करने हेतु 22 जनवरी 1998 को समय 6.00 बजे संध्या को बुलाया। निर्धारित समय एवं स्थान पर जब मैं पहूँचा तो वहाँ एक–एक कर कई आदिवासी शिक्षाविद एवं समाज सेवी उपस्थित हुए। समयानुसार, डॉ. फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में ''आदिवासी भाषा की लिपि एवं तोलोंग सिकि'' विषयक विचार–गोष्ठी आरंभ हई। इस बैठक में डॉ. फ्रांसिस एक्का, डॉ. रामदयाल मुण्डा, बिशप डॉ. निर्मल मिंज, फादर प्रताप टोप्पो, डॉ. नारायण उराँव एवं मैं (मनोरंजन लकड़ा) उपस्थित थे। झारखण्ड आंदोलन के पक्षधर षिक्षाविदों ने डॉ. एक्का के समक्ष एक प्रश्न रखा कि आदिवासी आंदोलन को कारगर बनाने के लिए यहाँ की भाषा एवं संस्कृति को संरक्षित तथा संवर्द्धित करना होगा। इसके लिए साहित्य सृजन करने होंगे। इस स्थिति में हमें सुझाव दीजिए कि वर्तमान समय के अनुकूल हम कौन सी लिपि को अपनाएँ ? क्या, हमें नई लिपि विकसित करनी चाहिए या स्थापित लिपि देवनागरी या रोमन लिपि को अपनाएँ ? वहीं पर कुछ व्यक्ति, आदिवासी सामाजिक पहलुओं पर विचार व्यक्त करते हुए बोले कि वर्तमान परिपेक्ष्य में आदिवासी पहचान की समस्या हो रही है। इसके लिए आदिवासी भाषाओं को एक सूत्र में बांध सकने के लिए एक लिपि की आवष्यकता है, जो लोगों में आदिवासी पहचान जगा सके और जो आधुनिक तकनीकी संगत भी हो। इस संदर्भ में विगत 8–9 वर्षों से लगातार कार्य करते हुए डॉ. नारायण उराँव द्वारा विकसित तोलोंग सिकि की प्रस्तुति को समाधान के तौर पर विमर्ष किया जाए।

उक्त तमाम बातों को ध्यान पूर्वक सुनने–समझने के बाद डॉ. एक्का, अपना विचार रखे। उन्होंने कहा कि वैष्विक जगत में लिपि तीन तरह से प्रस्तुत हुई है – (1) Socio-cultural base लिपि। जिसका आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक होता है, जिससे लोग भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। जैसे, सभी भारतीय भाषाओं की लिपियों का आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक है। (2) Machine base लिपि। ऐसी लिपियाँ machine के अनुरूप ही विकसित होती हैं। (3) Politics base लिपि। ऐसी लिपियाँ, किसी भाषा– भाषियों पर किसी राजनीति के तहत थोपी जाती हैं।

दिनांक 22.01.1998 की विचार गोष्ठी में Machine based लिपि विकसित किये जाने हेतु डॉ. फ्रांसिस एक्का को अधिकृत किये जाने पर सहमति बनी तथा दिनांक 24.01.1998 को 9.00 बजे सुबह फिर से उसी स्थान पर बैठक होने का निर्णय के साथ बैठक समाप्त हुआ।

उसके बाद दिनांक 24.01.1998 को सुबह 9.00 बजे डॉ. फ्रांसिस एक्का के कमरे में ही बैठक आरंभ हुई। बैठक में तीन और साथी, जिनमें श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत एवं प्रो. नारायण भगत शामिल हुए। इस गोष्ठी में आदिवासी समाज की भाषा, संस्कृति एवं सामाजिक विरासत संबंधी तमाम बातों पर विचार–विमर्श के पश्चात् बैठक की अध्यक्षता करते हुए डॉ. एक्का ने कहा कि वर्तमान समय के अनुसार आदिवासी समाज के लिए एक नई लिपि की आवश्यकता निश्चित रूप से है। आगे उन्होंने कहा कि लिपि जैसी भी हो वह उनके लिए अर्थात एक भाषा विज्ञानी के लिए कोई समस्या नहीं है। साथ ही इस विषय में दर्शन और तकनीक को लाना बेकार का बहस करना होगा। इस संबंध में सबसे जरूरी बात है कि हमलोगों के सामने जो Suppressive force है, उसके against में हमारे पास क्या उपाय है? यदि इस समस्या का समाधान हो जाए तो आगे कार्य किया जाए।

बैठक के अंत में सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि – नई लिपि, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली हो तथा तकनीकी संगत हो। उपस्थित प्रतिभागियों ने डॉ. एक्का तथा डॉ. मुण्डा को संयुक्त रूप से तोलोंग सिकि को राज्य एवं देष स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए अधिकृत किया। इस निर्णय के साथ विचार गोष्ठी समाप्त हुई।

दोनों दिन के बैठक में उपस्थित होकर मुझे कई बाते सुनने–समझने को मिली। मुझें खुशी है कि मैं भी कुँड़ुख़ भाषा–लिपि की विकास यात्रा का एक गवाह हूँ।

– श्री मनोरंजन लकड़ा
सेवा निवृत, डिप्टी ट्रांस्पोर्ट कमिष्नर,संतालपरगना,
दुमका (बिहार), दिनांक – 24 जनवरी 1998

14 बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची में कुँड़ुख़ भाषा–साहित्य–लिपि पर कार्यशाला

ज्ञात हो कि बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची के सभागार में ''कुँडख़ भाषा–साहित्य–लिपि : दशा और दिशा'' विषयक कार्यशाला दिनांक 19 सितम्बर 1998 दिन शनिवार को सम्पन्न हुआ। यह कार्यशाला शोध संस्थान, राँची के निदेषक डॉ. प्रकाश चन्द्र उराँव तथा बिहार शिक्षा परियोजना के निदेशक श्री विनोद किसपोटा के संयुक्त तत्वधान में बुलाया गया था। इस कार्यशाला में बिहार शिक्षा परियोजना, रातू, राँची के तत्कालीन निदेशक श्री विनोद किसपोट्टा, आयकर अधिकारी श्री प्रभात खलखो, ए. जी. बिहार, राँची के लेखा अधिकारी श्री सरन उराँव, राँची विश्वविद्यालय, राँची के प्राध्यापक गण में से डॉ0 करमा उराँव, प्रो0 (श्रीमती) मीना टोप्पो, प्रो0 हरि उराँव, प्रो0 एलेक्सियुस ख़ाख़ा, प्रो0 नारायण भगत, समाजसेवी सह शिक्षाविद् डॉ0 निर्मल मिंज, इंजिनियर दुर्गा कच्छप, श्री प्रभाकर तिर्की, श्री मुरली मनोहर खलखो, श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत, श्री भिखम उराँव तथा तोलोंग सिकि के अन्वेशक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' उपस्थित थे। शोध संस्थान की ओर से उपनिदेशक श्री सोमा सिंह मुण्डा द्वारा कार्यशाला का संयोजन किया गया। यह कार्यशाला सह विचार–गोष्ठी, डॉ. निर्मल मिंज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। आरंभ में निदेशक डॉ. प्रकाश चन्द्र उराँव ने इस विचार–गोष्ठी की आवश्यकता एवं उदेश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्थान को जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय भाषाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा दिये जाने हेतु पाठ्य पुस्तक का लेखन, अनुवाद तथा प्रकाशन करने का विभागीय निर्देश प्राप्त हुआ है, जिसके आलोक में इस गोष्ठी से आवश्यक दिशा–निर्देश प्राप्त करना है।

इस कार्यशाला में कई महत्वपूर्ण विन्दुओं पर विचार–विमर्श किया गया। परिचर्चा में बातें आयीं कि एक आदिवासी बच्चा, जन्म से पाँच वर्ष की उम्र तक अपने माता–पिता एवं गांव–समाज में रहते हुए अपनी मातृभाषा में बोलता है, गाता है, कहानी सुनता एवं सुनाता है। वह अपने जीवन में घट रही बहुत सारी बातें सीख चुका होता है और आधुनिक विद्यालय में प्रवेश से पूर्व ढेर सारा ज्ञान भंडार संजोकर रखता है। परन्तु उसका यह ज्ञान भंडार आधुनिक विद्यालय के प्रथम कक्षा के प्रथम दिन ही शून्य हो जाता है। उस बच्चे को फिर से उन्हीं बातों को नये सिरे से दूसरी भाषा में सीखना पड़ता है। यहीं से उस बच्चे के मन में आदिवासी होने की हीन ग्रंथि का शिकार होना पड़ता हैं और वहीं से आरंभ होती है School drop out जैसी विडम्बना।

अतएव आदिवासी बच्चे को उसकी अपनी मातृभाषा में ही 1ली से 5वीं कक्षा तक शिक्षा दी जाय और हिन्दी एवं अंगरेजी भी आरंभ की जाए, जिससे उपरी कक्षा में हिन्दी–अगरेजी सीखने में मातृभाषा मददगार बनेगी। इसके चलते बच्चों के माता–पिता एवं अभिभावक अपने बच्चों के पढ़ाई में मददगार बन सकेंगे। इसी तरह आने वाले समय में कुँड़ुख़ भाषा के सम्पूर्ण विकास हेतु कुँड़ुख़ भाषा की अपनी लिपि की आवश्यकता होगी, जिसे आज इस प्रतिनिधि सभा में सर्वसहमति से निर्णय लिया जाना चाहिए।

कार्यषाला के अंत में सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि – 1. कुँड़ुख़ क्षेत्रों में, प्राथमिक शिक्षा, 1ली से 5वीं कक्षा तक कुँड़ुख़ माध्यम से ही हो। 2. कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि (लिपि) है। इसे केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर के निदेशक डॉ0 फ्रांसिस एक्का तथा पूर्व कुलपति डॉ0 रामदयाल मुण्डा द्वारा भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से स्वीकार किया गया है। अतएव इसके पूर्ण विकसित होने तक पढ़ाई में देवनागरी लिपि का प्रयोग हो तथा नई लिपि में भी साहित्य विकास हो।

– श्री सरन उराँव
वरीय लेखाकार, कार्यालय
महालेखकार राँची, बिहार।
दिनांक 19.09.1998

15. तोलोङ सिकि लिपि 15 मई 1999 ई0 को जनमानस के व्यवहार के लिए जारी

डॉ रामदयाल मुण्डा, पूर्व कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची एवं डॉ (श्रीमती) इन्दु धान, पूर्व कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, एवं सिद्धु–कान्हु मुरमू वि. दुमका द्वारा संयुक्त संयुक्त रूप से संवाददाता सम्मेलन कर दिनांक 15 मई 1999 को तोलोंग सिकि (लिपि) को जनमानस के प्रयोग के लिए जारी किया गया। संवाददाता सम्मेलन में डॉ रामदयाल मुण्डा, डॉ (श्रीमती इन्दु धान, प्रो नारायण भगत, डॉ. नारायण उरांव, प्रो. मीना टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री हिमांशु कच्छप, श्री महेश भगत, श्री मंगरा उरांव, श्री विवेकानन्द भगत एवं श्री साधु उराँव उपस्थित थे।

तोलोंग सिकि (लिपि) जनमानस के प्रयोग के लिए जारी

रांची, 15 मई (रा.ए.स.) : झारखण्ड क्षेत्र की भाषा के लिए तेलोंग सिकि नामक नयी लिपि का विकास कर लिया गया है। तेलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, सिरासिता प्रकाशन एवं ट्राइबल रिसर्च एनलिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एडुकेशन (ट्रेस) की ओर से संयुक्त रूप से इस लिपि (तेलोंग सिकी) को जन-मानस के बीच व्यवहार के लिए आज जारी किया गया।

ट्रेस एवं तेलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित आज एक संवाददाता इस लिपि को अंगीकार कर लिया है। इसी प्रकार दूसरे भाषा-भाषी भी अपनी आवश्यकता एवं इच्छानुसार इसे व्यवहार में ला सकते है।

संवाददाता सम्मेलन में बताया गया कि राज्य सरकार से लिपि को मान्यता दिलाने का प्रयास किया जाएगा। परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं की जांच की व्यवस्था जनजातीय भाषा विभाग करेगा। इस लिपि की खोज के इतिहास के संबंध में चर्चा करते हुए बताया गया कि भाषा एवं साहित्य के बचाव तथा विकास की दिशा में यह एक अनूठा कार्य है।

पेशे से चिकित्सक डा. नारायण उरांव 'सैन्दा' एवं उनके साथियों द्वारा गत 7-8 वर्षों के अनवरत सम्मेलन में यह जानकारी दी गयी। इस लिपि के विकास के लिए उपर्युक्त दोनों संगठनों की ओर से छह सेमिनार एवं कई सम्मेलनों का आयोजन किया गया था। इन सम्मेलनों में कई भाषाविद्, शिक्षाविद्, समाजसेवी एवं जनप्रतिनिधियों ने भाग लेकर इसकी आवश्यकता एवं औचित्य पर विचार विमर्श किया। वक्ताओं ने कहा कि यहां के जनमानस द्वारा वर्षों से जिस चीज की कमी महसूस की जा रही थी, उस कमी को तेलोंग सिकि ने पूरा किया। 19 सितम्बर 1998 को बिहार जनजातीय शोध एवं समाज कल्याण संस्थान, मोरहाबादी रांची द्वारा आयोजित एक सेमिनार में कुडुख भाषा-भाषियों ने प्रयास के बाद 'तेलोंग सिकि' नामक लिपि का शोध-संकलन किया गया। अब तक इस क्षेत्र के सिर्फ कुडुख (उरांव) भाषी ही लोग इसे अपनी भाषा की लिपि कह पाए है।

डा. उरांव का कहना है कि यह लिपि झारखण्ड वनांचल की आदिवासी भाषाओं की लिपि बन सकती है। यह लिपि उनके समाज के लिए नया नहीं है। उन्होंने समाज में प्रचलित अनुष्ठान चिन्हों एवं दिनचर्या के खेल-खेल में खींचे जाने वाले चिन्हों को संकलित कर उन्हे

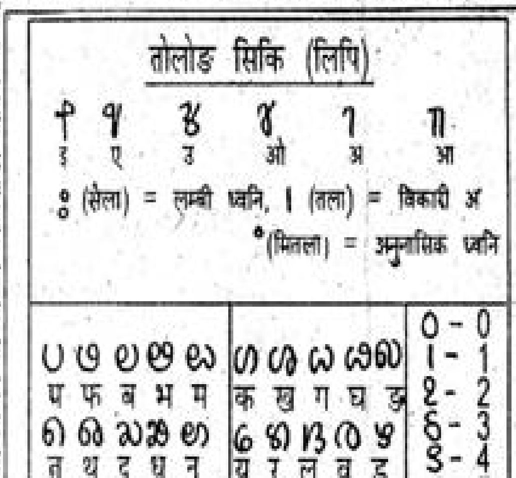

भाषा विज्ञान एवं ध्वनि विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुरूप संवारा है। लिपि के नामकरण के संबंध में डा. नारायण का कहना है कि तेलोंग एक प्रकार का आदिवासी पोशाक है। यह 24 हाथ लम्बा तथा 1-1/2 हाथ चौड़ा कपड़ा होता है। इसे कमर में लपेट कर पहना जाता है। इसकी खासियत यह है कि यदि इसके पिछले भाग को खींचा जाय तो लगभग 20 हाथ लंबा खींचा जाता है। कमर में लपेटने से बने इसके विभिन्न स्वरूपों को ध्वनि चिन्हों के रूप में प्रयोग किया गया है। दूसरी बात यह है कि तोल+ओंग का अर्थ संताली भाषा में बंधी हुई ध्वनि तथा सिकि का अर्थ चिह्न होता है अर्थात तोलोंग सिकि' का अर्थ बंधी हुई ध्वनि चिन्ह हुआ।

इस लिपि के चिन्हों को आधुनिकतम तकनीक यानि कम्प्यूटर विज्ञान के अनुरूप स्थापित किया गया है। डा. उरांव ने जानकारी दी कि कम्प्यूटर पद्धति के डिस्प्ले को उन्होंने आदिवासियों द्वारा किया जानेवाला डंडा कट्टना पूजा अनुष्ठान में खींचे जाने वाले वेदि चिन्ह के आधार पर तैयार किया है। इस वेदि चिह्न में जितनी रेखाएं है, उतने ही व्यंजन वर्ण रखे गए है।

इस लिपि को निर्णायक स्वरूप प्रदान करने से पूर्व लगभग छह सेमिनारों एवं कई सम्मेलनों में आदिवासी विद्वानों, भाषाविदों, साहित्यकारों, समाज सेवियों, जन प्रतिनिधियों एवं शिक्षाविदों से सलाह मशविरा कर, आवश्यक संशोधन किया गया है। इस कार्य में रांची विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. रामदयाल मुण्डा, बिहार लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य डा. करमा उरांव, बिशप डा. निर्मल मिंज, बिहार स्वास्थ्य सेवा के पूर्व अपर निदेशक डा. विश्वनाथ भगत, कार्तिक उरांव कालेज गुमला के प्राचार्य डा. बहुरा एक्का, करमचंद भगत कालेज बेड़ो, के पूर्व प्राचार्य डा. ज्योतिलाल उरांव, सत्यभारती रांची के निदेशक प्रकाश टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप तथा मनोरंजन लकड़ा, अधिवक्ता वासुदेव बेसरा, रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्रो. इन्द्रजीत उरांव, अधीक्षण अभियन्ता अजित मनोहर खलखो, महिला पॉलिटेकनिक के वेद प्रकाश श्रीवास्तव, गोस्सनर कालेज की व्याख्याता श्रीमती ज्योति टोप्पो, पूर्व छात्र नेता प्रभाकर तिर्की एवं विनोद कुमार भगत ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संवाददाता सम्मेलन में डा. राम दयाल मुण्डा, डा. नारायण भगत, डा. नारायण उरांव, महेश भगत, साधु उरांव, मनोहर लकड़ा, मनोरंजन लकड़ा, हिमांशु कच्छप, प्रो. मीना टोप्पो एवं डा. इन्दु धान उपस्थित थे।

16. तोलोङ सिकि (लिपि) का कम्प्यूटर वर्जन 'केलि तोलोङ फॉन्ट' का लोकार्पण

माननीय कार्डिनल तेलेस्फॉर पी0 टोप्पो, डॉ0 करमा उराँव, श्री किसलय जी, श्री विनोद कुमार भगत, श्री प्रभाकर तिर्की आदि द्वारा दिनांक 20 नवम्बर 2002 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन Kellytolong फॉन्ट के प्रथम संस्करण का लोकार्पण किया गया। तोलोङ सिकि लिपि का कम्प्यूटर वर्जन, फॉन्ट पत्रकार श्री किसलय जी ने तैयार किया है।

प्रभात खबर, रांची — 21 नवंबर 2002, गुरुवार 7 — राजधानी

आदिवासी भाषाओं की लिपि के सॉफ्टवेयर की सीडी का लोकार्पण

केलि तोलोंग डीटीपी सॉफ्टवेयर की सीडी जारी करते अतिथि.

सन 2001 में लिपि बन कर तैयार हुई

बेटी के नाम पर तोलोंग सिकि लिपि

Kelly Tolong Keyboard Map (Phonetic)

KellyTolong Software is the Computer Version of Tolong Siki Script, Invented by Dr. Narayan Oraon (TRACE)

रांची, गुरुवार, 21 नवम्बर, 2002 — 16

हिन्दुस्तान

सत्यभारती सभागार में आदिवासी लिपियों पर आधारित तोलोंग सिकि लिपि का लोकार्पण

कंप्यूटर पर तोलोंग सिकि लिपि एक ऐतिहासिक उपलब्धि : आर्च बिशप

मुख्य संवाददाता

लोकार्पण समारोह में उपस्थित आर्च बिशप तेलेस्फोर पी टोप्पो व अन्य।

17. तोलोङ सिकि के संबंध में भाषाविदों एवं शिक्षाविदों के विचार

Dr. Nirmal Minj

Most adivasis are doubly deprived of their cultural identity. They begin their schooling in an alien script and language. Thus they have stepped two steps down their personal and community life. First their mother tongue is not recognized and they have no script of their own. To be an independent and free adivasi person and community they must have their own script and language for developing their literature and culture. The education through their own script and language will make the adivasi a real free and independent person and community with their self respect and dignity.

- Bishop Dr. Nirmal Minj

Dated 04.04.1997 Ranchi

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास)

Dr. Karma Oraon

Script is the third category for presentation and documentation of expression and conversations of human beings, where the symbolic and phonetic conversation stand first and second.

The tribal groups of the Jharkhand and neighbouring areas have been intending to develop a separate tribal script for better communication within their fold on the basis of social, cultural, historical and ecological backgrounds and settings.

Dr. Narayan oraon 'Sainda' along with the member of Sirasita Prakashan has made a landmark endeavour to develop the required aspect, which is known as 'Tolong Siki' (Tolong Script). ....

Dated 04.04.1997 - Dr. Karma Oraon

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास)

.... डॉ. नारायण, आप आदिवासी भाषाओं के लिए लिपि विकास में लगे हैं और आपकी समस्या है कि सभी स्वर ध्वनियों के लिए अलग–अलग लिपि चिन्ह रखे जाएँ अथवा देवनागरी लिपि की वर्णमाला की तरह हो। इसके बारे में एक अच्छा भाषा जानकार ही सलाह दे सकता है। मैं कुँड़ुख़ भाषा का अच्छा जानकार नहीं हूँ। .... फिर भी इस विषय पर मेरा सुझाव सुनिये – हमलोग हिन्दी भाषा की देवनागरी लिपि के मात्रा चिन्हों तथा इसके प्रयोग में अकसरहाँ उलझ जाते हैं। हिन्दी के हृस्व एवं दीर्घ उच्चारण और उसके चिन्हों को बायें तथा दायें ओर से लिपि चिन्ह दिये जाने में हमेशा ही उलझन होती है। संभव हो तो नई लिपि में इस समस्या का समाधान ढूँढ़ें और इस तरह के उलझन से लोगों को बचाएँ तथा खाश करके बच्चों के मददगार बनें।

– डॉ. फा. बेनी एक्का
निदेशक
जेवियर समाज सेवा संस्थान
राँची (झारखण्ड)

दिनांक – 09 अगस्त 1997

डॉ0 बेनी एक्का

प्रो0 इन्द्रजीत उराँव

सय नारायण उराँवस गही ई 'कत्थ एःख़' तंगआ खोंड़हा का बेलख़ा ता होरमा आःलर गही उज्जना–ओक्कना अरा नन्ना खोंड़हन्ता आःलर गने ओड़ा–सड़ी मन्ना, मुन्धभारे काःलर दरा ओन्टा अकय कोहा चम्बा चिओ। इन्ना ता चोक्खा मंज्जका बेड़ा नू सय नारायण उराँवस लेखआ अबगम बग्गे लूरगरियर गही चाड़ रअ़ई। एःन परपन्द जिया ती दव घोखदन अरा बाःख़दन का ईस गही ओःरे नंज्जका नलख बरना बेड़ा गे खोंड़हन्ता होरमा आःलर गही बोलतन माःनिम ओत्तर दरा निजिड़तआ ओंग्गो।

—श्री इन्द्रजीत उराँव, रीडर
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय राँची।

दिनांक — 13 मई 2001

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास)

.... तोलोंग–सिकि को कुँडुख़ कत्था की आधारभूत लिपि के रूप में मुझे अंगीकार करते हुए थोड़ी भी शंका नहीं है जहाँ तक अपनी भाषा की सहज जानकारी है और जिस पर मैं स्वंय को गौरवान्वित महषूस करता हूँ। आप तमाम कुडुख़ भाषियों एवं साहित्य प्रेमियों से आग्रह करना चाहूँगा कि आप भी इस पर गंभीरता पूर्वक चिन्तन–मनन करें तथा इसके माध्यम से कुँडुख़ भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को अक्षुण रखने में मदद करें। मैं इस लिपि के सृजनकर्ता के समर्पण, त्याग और तपस्यामूलक प्रयासों से अत्यधिक प्रभावित हूँ, जिन्होंने समुदाय के व्यापक हित में तोलोङ सिकि का सृजन कर समाज को अतुलनीय देन दी है। मैं डॉ. नारायण उराँव के मंगल भविष्य की कामना करता हूँ।...

— डॉ. बहुरा एक्का
कुलपति, वि.भा.वि.,हजारीबाग (झारखण्ड)

दिनांक — 12 फरवरी 2003

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास।)

डॉ0 बहुरा एक्का

संविधान के अनुच्देद — 29 में हमें अपनी भाषा, लिपि एवं संस्कृति को बनाये रखने का अधिकार है। साथ ही साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के नजरिये से एक पूर्ण भाषा के लिए उस भाषा की स्वतंत्र लिपि एवं व्याकरण का होना आवश्यक है। अतः संवैधानिक अधिकार के दायरे में अपनी भाषा, संस्कृति एवं लिपि को बनाये रखने हेतु किया गया कार्य अति सराहणीय है। यह जानकर हमें अत्यधिक खुशी हो रही है कि आदिवासी भाषा के विकास हेतु झारखण्ड क्षेत्र में *तोलोंग सिकि* नामक एक लिपि का विकास हुआ है तथा कई विद्यालयों में इसकी पढ़ाई–लिखाई आरंभ हो चुकी है। संघ लोक सेवा की परीक्षा की तैयारी के दौरान मैंने आदिवासी समाज के इतिहास के बारे में जानने का प्रयास किया और पाया कि जनजातीय समाज अपने ज्ञान भण्डार को संजो कर रखने में समर्थ नहीं रहा, जो इसके पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण रहा है। इसके अतिरिक्त भाषायी एवं सांस्कृतिक पहचान हेतु किसी भाषा की लिपि का होना आवश्यक है। वैसे वर्तमान परिवेश में रोजगार की भाषा हिन्दी एवं अंगरेजी को सीखना है किन्तु एक तीसरी भाषा के रूप में अपनी मातृभाषा (आदिवासी भाषा) का पठन–पाठन भी आवश्यक है। तोलोंग सिकि के विकास से आदिवासी भाषा के विकास में नई जागृति एवं स्फूर्ती आयगी ऐसा मेरा विश्वास है। पेशे से चिकित्सक डॉ. नारायण उराँव एवं उनके सहयोगियों को इस महती कार्य के लिए मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ. अरूण उराँव

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास।)

— डॉ. अरूण उराँव, आई.पी.एस.
आरक्षी अधीक्षक, पूर्वी सिंहभूमी, जमषेदपुर।

दिनांक — 23 जून 2003

डॉ० (श्रीमती) इन्दु धान

.... यदि हम वास्तव में अपने क्षेत्र के आदिवासियों की उन्नति चाहते हैं तो यह प्रयास करना होगा कि सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी कम से कम हर बच्चे को प्राथमिक शिक्षा मिले। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में यह प्रबंध नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में मिले, लेकिन तोलोंग लिपि को मान्यता मिल जाने पर यह संभव होगा कि आदिवासी बच्चे अपनी मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसके अतिरिक्त हमारी परम्परा और हमारे इतिहास को भी लिपिवद्ध करने की आवश्यकता है। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस क्षेत्र में बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों का ध्यान इस ओर आया है।

– डॉ. (श्रीमती) इन्दु धान
पूर्व कुलपति,
मगध विष्वविद्यालय, बोधगया (बिहार)

दिनांक – 27 अप्रैल 2003

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास।)

अपनी भाषा और संस्कृति किसी जाति विशेष की पहचान होती है। हमारे आदिवासी समाज में बहुत सी भाषाएँ बोली जातीं है, पर कुछ भाषाओं की लिपि अभी तक विकसित नहीं हो पायी है। यही कारण है कि बहुत सी भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। किसी भाषा की लिपि उस भाषा के लिए कवच की तरह है जो उसे स्थायित्व प्रदान करता है, उसे लुप्त होने से बचाती है।

डॉ.नारायण उराँव एवं उनके सहयोगियों द्वारा विकसित कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोंग सिकि इस दिश में एक सराहनीय कदम है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं।

– डॉ. विक्टर तिग्गा
पूर्व कुलपति
सिद्धू कान्हू वि.वि. दुमका (झारखण्ड)

दिनांक – 20 फरवरी 2011

डॉ० विक्टर तिग्गा

श्री मिसिर उराँव

समाज की पहचान उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती है। जिसमें भाषा, संस्कृति के वाहक के रूप में होता है। इसलिए संस्कृति के संरक्षण हेतु उसके वाहक अर्थात उसकी भाषा को संरक्षित एवं विकसित करना आवश्यक है। वर्तमान परिवेश में पुरखों की धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए उस भाषा की अपनी लिपि विकसित कर प्राथमिक कक्षा से विश्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाई–लिखाई में स्थान दिया जाना चाहिए। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दबाव से आदिवासी समाज की अस्मिता को संरक्षित एवं विकसित करने हेतु अपनी भाषा को सुरक्षित रखना जरूरी है। इसी विचारधारा से राँची विश्वविद्यालय में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खोला गया और मुझे कुँड़ुख़ टेस्क्टबुक कमिटि का सदस्य की जिम्मेदारी मिली। भाषा बचाव एवं इसे अगली पीढ़ी तक ले जाने की दिशा में कुँड़ुख़ समाज के बुद्धिजीवियों ने तोलोंग सिकि (कुँड़ुख़ भाषा लिपि) विकसित कर कुँड़ुख़ भाषा विकास को गति प्रदान किया है, वे सभी बधाई के पात्र हैं।

– श्री मिसिर उराँव
पूर्व प्रतिकुलपति
सिद्धू कान्हू वि.वि. दुमका (झारखण्ड)
पूर्व कुलपति (कार्यकारी)
तिलका मांझी भागलपुर विष्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)।

दिनांक – 15.11.2015

डॉ0 माहिदास भट्‌टाचार्य

''किसी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए उसके सांस्कृतिक धरोहर को बचाकर रखना आवष्यक है। साथ ही उस भाषा का नेत्र ग्राह्य रूप यानि उस भाषा की लिपि का होना भी आवष्यक है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में यूनिवर्सल सिस्टम को अपनाते हुए, अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने हेतु मातृभाषा की शिक्षा जरूरी है, किन्तु भाषा एवं लिपि के विकास के क्षेत्र में कार्य करने के लिए समाज को स्वयं आगे आना पड़ता है, सरकार इसमें मदद करती है। कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि में प्रकाशित पुस्तक 'कइलगा', संस्करण–2013 में नासिक्य स्वर सूचक एवं नासिक्य व्यंजन सूचक दोनों के लिए अलग चिन्ह नहीं है। लेखन में दोनों स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए।''

– डॉ. माहिदास भट्‌टाचार्य, भाषाविद्
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
जादवपूर यूनिवर्सिटी, कोलकाता

दिनांक : 06 जुलाई 2016

भाषा और संस्कुति का आपस में गहरा संबंध है। संस्कृति को बचाने के लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों को अपने समुदाय द्वारा संचित ज्ञान, हस्तांतरित करने के लिए भाषा ही एकमात्र माध्यम है। भाषाओं का संरक्षण जैव संरक्षण जैसा ही महत्वपूर्ण है। हमारी जनजातीय भाषाएँ अनंत ज्ञान का श्रोत हैं। कई–कई हजार वर्ष पुरानी इन भाषाओं में शोध करने से बहुत सी अनसुलझी पहेलियाँ सुलझ रही हैं। इस वजह से जनजातीय भाषाएँ, खासतौर पर लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण की महती आवश्यकता है। डॉ. नारायण उराँव जो पेशे से बालरोग चिकित्सक हैं, वे मरीजों की देखभाल और परिचर्चा जिस समर्पण भाव से करते हैं, उसी भाव से मातृभाषा कुँड़ुख़ की सेवा भी करते हैं। अपनी मातृभाषा को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करने की यह उनकी उत्कट अभिलाषा है, जिससे कुँड़ुख़ भाषा को कम्प्यूटर पर स्थान तो मिला ही, साथ में शिक्षा में भी उचित स्थान मिला है और इस भाषा को कई स्थानों पर पढ़ाया जाना शुरू कर दिया गया है। डॉ. उराँव का यह अतुलनीय प्रयास सभी भाषा–भाषियों को अपनी भाषा को संरक्षित करवाने और तकनीकी तथा शिक्षा एवं रोजगार की भाषा के रूप में स्थापित करवाने हेतु प्रेरित करेगा।

श्री दिलीप कुमार सिंह
(भाषाविद)
उपप्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद।

दिनांक : 21 फरवरी 2018

डॉ. एम. रहमान
भाषाविद् एसोसिएट प्रोफेसर,
आई.आई.टी.–आई.एस.एम. धनबाद।

Kurukh is a North Dravidian language of the Oraon tribe of East Central India and spoken by approximately two million people. In Dravidian languages the feature of vowels nasalization is less prolific but in Indo Aryan languages like Hindi, Gujrati, Punjabi etc, the nasal vowels are found. Tamil and Kurukh as Dravidian languages have the feature of vowel nasalization. The coupling of the oral – nasal tract in the vowel utterance of the Kurukh language, adds the vowel nasalization in the language as a distinctive feature. The onset of the syllable interestingly is the stop followed by the vowel which is nasalized. The nasalized vowels in Kurukh occur in the monosyllabic or disyllabic words.

दिनांक : 28 फरवरी 2018

कुँड़ुख़ लिपि तोलोंग सिकि गही ख़ीःरी

“कुँड़ुख़ कत्था गही ख़ीःरी गा दिघम रअ़ई। बरा नाम गुनईन ननोत। कत्था कछनखरना अरा अदिन एःरा गे सीःबा ख़ाःरना गही कत्था गा ननना मनो। इय्या कुँड़ुख़ कत्था अरा लिपि पइत्त नु अख़ना गही बखनी नंज्ज एःरोत। कछनखरना अरा ख़ेबदा ती मेनना मुनता ख़ीःरी तली, मुन्दा कत्थन मेनर की अदिन ख़न्न ती एःरना बेसे चिन्हाँ चिअ़ना एँड़ता चम्मबी तली। अदा - आद अंगरेजी, अदा - आद हिन्दी! अन्नेम एःरर किम तेंग्गोर चिओर का इःद का आद एन्नेद का अन्नेद बओर। अवंगेम कुँड़ुख़ लिपि गही ख़ीःरी तेंग्गना अरा अदिन टूड़ना–बचना ही चाँड़ मनो।

एकअम लिपि नु ‘तोःड़’ उरमिन ती सन्नी दरा ओःरे चटख़ना तली। कुँड़ुख़ नु सरह तोःड़ 6 गोटंग **₽ V ४ ɤ ˥ Π /** इ ए उ ओ अ आ मनी अरा हरह तोःड़ गा 35 गोटंग मनी, अदिन इसन तेंग्गना चाँड़ मल्ला। पहें हरह तोःड़ ‘प’ ती ओःरे मनी। आद एन्ने **ᑌ ७ ల ಲ ѡ** बेसे इथिर’ई अरा इबड़द प् फ् ब् भ् म् ब’अर फुरूचतार’ई। इदिन गा कुँड़ुख़र अरा आदिवासी लूरगरियर घोःड़चर दरा एःदर चिच्चर का कुँड़ुख़ हहस तोःड़ इवन्दम मनो। अबड़न जोड़–नाड़ ननर किम सिखिरना मनो। फिन दिगहा, सन्नी फरक–फरक ननअम मनी। अदिन तेंग्गा गे चिनहाँ मनी। तोलोंग सिकि ही **₽** अरा हिन्दी गही इ हहसन दिगहा कमआ गे हिन्दी नु ि टूड़ना मनी, मुन्दा कुँड़ुख़ नु **:** चिआ ख़ने आद दिगहा मनी काःली। अन्नेम कुँड़ुख़ नु ‘स’ ओण्टे एका मनी। ष अरा **ष** मल मनी। हिन्दी ही क्ष, त्र, ज्ञ, श्र हुँ मल मनी। ‘ख़’ ‘ज़’ अरा अ़ तोड़ हिन्दी ती बिलग बि’ई।

इदा ! एरा तो एःन गा तोलोङ सिकि नुम नमुद चिआ–चिआ तेंग्गा बेद्दा लगदन। अक्कु एःन, तोलोङ सिकि एका से कुँड़ुख़ कत्था ही बखड़े नु बरचा दरा कोरचा अदिन अक्कु तेंग्गोन–मेन्तओन। एःन गा जोंःख़ परिया तिम कुँड़ुख़ लिपि पइत्त नु बेद्दा गे ओःरे नंज्जकन। ओःरे नु ओन्टा सामुएल रंका नाःमे ही मास्टरस सन्त पॉल लूरकुड़िया नु बचतआ लगियस। आ रंका मास्टरस कुँड़ुख़ लिपि ओत्थरस। आस – ‘न’ गे नेर्र बेसे चिनहाँ कमनुम केरस। मुन्दा टूड़ा गे उजगोम पोल्ला काःला। जोक्क गेच्छा काःलर आद मुंज्जरा केरा। इदि ख़ोःखा ओरोत डॉ. अनन्ती जेबा सिंह नाःमे ही तमिल मुक्का ‘ब्राहमी लिपि’ ती ‘बराती लिपि’ ओत्थरा। अदिन जोक्क कुँड़ुख़र इंजिरअर ‘‘बाईबलन’’ कुँड़ुख़ नु तरजुमा ननर आ ब्राहमी लिपि ती चिपताःचर। आद हिन्दी ती नन्ना मल एत्थरा। ई ब्राहमी लिपि हुँ बग्गे उल्ला ठठआ पोल्ला। मुन्ध नु फर्दिनेन्द हॉनस गने मिसनरी सहेबर रोमन लिपि ती ढेर बग्गे पुथि टूड़यर। नाम हुँ अदिन इंजिरअर टूड़ा–बचआ ओःरे नंज्जकत, मुन्दा आद हुँ बग्गे उल्ला संग्गे चिआ पोल्ला। रोमन लिपि ख़ोःख़ा कुँड़ुख़र देवनागरी लिपिन इंजिरअर दरा टूड़ा–बचआ ओरे नंज्जर अरा अक्कुन गूटी मोघोरका रअ़नर। मुन्दा इत्ती एन्देर मलदव मना लगी अदिन गा आर मलम घोखआ लगनर। कुँड़ुख़ कत्था हिन्दी गही पतड़ा, टोड़ंग, परता नु एबेसेरआ काःला लगी। इत्ती कुँड़ुख़ कत्था नूख़ूरआ–नूख़ूरआ उज्जा लगी। दहदर कुँड़ुख़ मलम एथेरआ लगी। इदिन जोक्क कुँड़ुख़र ईःरयर, बुज्झरर, घोखचर। ई मजही नुम धरमे सवंग डॉ. नारायण उराँव ‘सैन्दा’ सिन चाःजर मुन्दहाःरे ओन्दरा। आस कुँड़ुख़ नेग चाःलो ही मूःलीन धरअर की डण्डा कट्टना (भेलवाफड़ी) नेगचार ती गुनआ ओःरे नंज्जस। दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) नु डॉक्टरी ही पढ़ाई ननु सिन धरमे, आस गही मेद्दोन तिखड़ाःचा दरा तोलोङ सिकि ही छपन, कुँड़ुख़ लिपि रूःपे नु दहदर ननताःचा। आस गने जोक्क कुँड़ुख़र संग्गे चिअर नलख नना हेल्लरर। डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, इरबारिम भखा विज्ञान गही पंडितर सन्नी कमिटि गने होटल महाराजा, कचहरी चौक, राँची नु ओक्कर तोलोङ सिकिन फँड़ियाःचर दरा ओरमर छमहें एःदर चिच्चर का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था अरा उरमी आदिवासी भखा गे दःव मनो। कुँड़ुख़ गे गा तोलोङ सिकि अक्कु नमजद्दी मंज्जा केरा। झारखण्ड अरा पष्चिम बंगाल सरकार इदिन इंज्जरा दरा असम, छतीसगढ़, ओड़िसा, नेपाल, भूटान तरा हुँ ईद परदा लगी अरा असन टूड़ा–बचआ लगनर।

डॉ0 नारायण उराँव ‘सैन्दस’ गने जोक्क कुँड़ख़र संग्गे मनर ‘‘बक्कहुही’’ नाःमे ही ओण्टा मून्दचन्दोख़ (त्रैमासिक) कुँड़ुख़ पतख़ा (पत्रिका) ओथोरआ लगनर। आद झारखण्ड, प. बंगाल, असम, ओड़िसा, छतीसगढ़, यू.पी. अरा नन्ना राःजी तरा बींःड़िरआ लगी। कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी, दिल्ली हुँ अक्कु इंज्जरा, पहें तोलोङ सिकि ती बग्गे नलख अरगी मना। अक्कु गा बअना मनो का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था गही सिकि तली।

डॉ0 निर्मल मिंज ‘झरिया’
संस्थापक प्राचार्य, गॉस्सनर कालेज, राँची
लेखक, साहित्यकार, आदिवासी चिंतक एवं
साहित्य अकादमी भाषा सम्मान 2016 से सम्मानित।

दिनांक : 15 नवम्बर 2019

18. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि सामाजिक सह सांस्कृतिक तथा प्रकृतिवादी अवधारणा पर आधारित

तोलोंग सिकि एक वर्णात्मक लिपि है। इससे, उच्चारण के अनुसार लिखा एवं पढ़ा जाता है। इसमें हलन्त का प्रयोग नहीं होता है। इस लिपि को कुँड़ुख़ भाषियों ने, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की सामाजिक स्वीकृति प्रदान की है तथा झारखण्ड सरकार द्वारा कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की वैधानिक मान्यता देकर, विद्यालयों में पठन–पाठन का अवसर प्रदान किया गया है। कुँड़ुख़ भाषा एक योगात्मक भाषा है। बोलचाल में, योगात्मक तरीके से खण्ड–ब–खण्ड उच्चरित किया जाता है। इस लिपि के अधिकतर वर्ण वर्तमान घड़ी के विपरीत दिशा (Anti Clockwise) में व्यवस्थित है। इस लिपि का आधार पूर्वजों द्वारा संरक्षित, प्रकृतिवादी सिद्धांत है। हवा का बवण्डर (बईर'बण्डो), समुद्र का चक्रवात, अधिकांश्श लताओं का चढ़ना आदि प्राकृतिक चीजें, घड़ी की विपरीत दिशा में सम्पन्न होती है। प्रकृति के इन रहस्यों को, आदिवासी पूर्वजों ने अपने जीवन में उतारा और जन्म से लेकर मृत्यु तक के अनुष्ठान, घड़ी की विपरीत दिशा में सम्पन्न करने लगे। हल चलाना, जता चलाना, छिरका रोटी पकाना, अभिवादन करना, नृत्य करना, चाःला टोंका की पूजा करना, देबी अयंग स्थल की पूजा विधि, डण्डा कट्टना अनुष्ठान आदि क्रियाएँ घड़ी की विपरीत दिशा में निहित है। खगोलीय तथ्य है कि संसार में, अधिक से अधिक प्राकृतिक घटनाएँ घड़ी की विपरीत दिशा में ही सम्पन्न होती है। ब्रह्मांड में पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर घड़ी की विपरीत दिशा में परिक्रमा किये जाने से प्रकृति के सभी क्रिया–कलाप इससे प्रभावित होती हैं। इन प्राकृतिक क्रिया–कलापों एवं सामाजिक सह सांस्कृतिक अवदानों को आदिवासी पोशाक तोलोङ की कलाकृति से जोड़कर, भाषाविज्ञान के सिद्धांत पर यह लिपि स्थापित है।

– डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' (शोध एवं अनुसंधान – तोलोंग सिकि)

19. कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) के संबंध में सरकारी एवं विभागीय अधिसूचना

1. मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, रांची द्वारा जारी वर्ष 2003 की अधिसूचना

मानव संसाधन विकास विभाग

संकल्प

संख्या-प्रा०शि०नि० 620/01 1278/

भारतीय संविधान की धारा 350 क० के प्रावधानों के तहत प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण कार्य संचालित करने की व्यवस्था की गई है, एवं इस व्यवस्था के अन्तर्गत पूर्ववर्ती बिहार राज्य में मातृभाषा के रूप में हिन्दी, बांग्ला, उड़िया, उर्दू, मैथिली, संथाली, उराँव (कुड़ुख), हो, मुंडारी एवं एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए अंग्रेजी भाषा को मान्यता दी गई।

झारखंड राज्य के गठन के पश्चात यह आवश्यक हो गया कि राज्य की भौगोलिक सीमा में आवासित विभिन्न जाति, समुदाय एवं ऐसे भाषा-भाषी समुदायों के लिए क्षेत्र विशेष में, वर्ष 1991 की भाषा संबंधी भारत की जनगणना के आधार पर इनकी आबादी के अनुरूप एवं उनकी भाषा संबंधी भावनाओं का समादर करते हुए उनके सामाजिक परिवेश के अनुरूप भाषा नीति लागू किया जाए।

2. तदनुसार एतद् संबंधी विभागीय प्रस्ताव पर मंत्रिपरिषद की स्वीकृति के पश्चात राज्य सरकार ने निर्णय लिया है, कि झारखंड की भौगोलिक सीमा के, बहु-भाषा भाषी क्षेत्रों में उनकी जनसंख्या/पर्याप्तों के आधार पर प्रारंभिक शिक्षण के क्षेत्र में वर्ग 1 से चिन्हित स्थान विशेष में हिन्दी राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त, मातृभाषा के रूप में, वर्ग एक से हिन्दी, बंगला, उड़िया, उर्दू, संथाली, उराँव (कुड़ुख), हो, मुंडारी, खड़िया, खोरठा, कुरमाली तथा एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए अंग्रेजी भाषा के माध्यम से मातृभाषा के रूप में प्रारंभिक शिक्षण कार्य कराने की अनुमति दी जाए। इनमें से जिन मातृ भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है, उनकी उनकी लिपि के रूप में देवनागरी लिपि की मान्यता दी जाय।

आदेश: आदेश दिया जाता है कि राज्य सरकार के इस संकल्प को राजपत्र के अगले असाधारण अंक में प्रकाशित कराया जाए या उसकी प्रति निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, झारखंड राँची को प्रेषित की जाए।

झारखंड राज्यपाल के आदेश से
(अमित खरे)
सरकार के सचिव

ज्ञापांक प्रा०शि०नि० 620/01 1278 /दिनांक 4-6-03 /

प्रतिलिपि: अधीक्षक, राजकीय मुद्रणालय, डोरण्डा, राँची को राजपत्र के अगले असाधारण अंक में प्रकाशनार्थ प्रेषित।

(अमित खरे)
सरकार के सचिव

ज्ञापांक प्रा०शि०नि० 620/01 1278 /दिनांक 4-6-03 /

प्रतिलिपि: माननीय मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव/माननीय विभागीय मंत्री के आप्त सचिव/मुख्य सचिव के सचिव/विकास आयुक्त के सचिव/सभी प्रमण्डलीय आयुक्त/सभी उपायुक्त/सभी क्षेत्रीय उप शिक्षा निदेशक/सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी/सभी जिला शिक्षा अधीक्षक एवं सभी संबंधित पदाधिकारी/कर्मचारी को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

(अमित खरे)

2. झारखण्ड सरकार द्वारा विभागीय पत्रांक 129 दिनांक 18.9.2003 द्वारा कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को स्वीकृति प्रदान किया गया तथा इसे *संविधान की आठवीं अनुसूची* में शामिल किये जाने हेतु गृह मंत्रालय, केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को अनुशंसा पत्र प्रेषित किया गया है।

मुखत्यार सिंह, भा० प्र० से०
Mukhtar Singh, I.A.S.
आयुक्त एवं सचिव
Commissioner and Secretary

झारखण्ड सरकार

114

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची ।
Department of Personnel, Administrative Reforms & Rajbhasha, Government Jharkhand, Ranchi.
☎ 0651 - 2403221 (Off.)
0651 - 2480048 (Res.)
0651 - 2403253 (Fax)

पत्रांक :-8/रा०-8/2001का0-.....129.............., दिनांक : 18-9-2003

सेवा में,

सचिव,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली ।

विषय :- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो एवं उरांव/ कुरूख भाषा को शामिल करने के संबंध में ।

महोदय,

झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, उरांव/ कुरूख भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है । संथाली भाषा की लिपि "ओल चिकी", मुण्डारी भाषा की लिपि "देवनागरी", हो भाषा की लिपि "वारंगक्षिति" तथा उरांव/ कुरूख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकी है । वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार संथाली, मुण्डारी, हो तथा उरांव/ कुरूख भाषा का प्रयोग झारखण्ड सहित देश के 29 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में करने वाली जनसंख्या क्रमशः 52,16,325, 8,61,378, 9,49,216 तथा 14,26,618 है।

झारखण्ड सहित अन्य कई राज्यों में इन भाषाओं की पढ़ाई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय स्तर पर होती है ।

जनजातीय भाषाओं के उत्थान के दृष्टिकोण से झारखण्ड सरकार का यह सुविचारित मंतव्य है कि उक्त चारों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाय । अतएव यह अनुरोध है कि संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं अनुच्छेद 351 के प्रावधानों के अन्तर्गत उपाबद्ध आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो, एवं उरांव/ कुरूख भाषा को सम्मिलित किया जाय ।

विश्वासभाजन,

(मुखत्यार सिंह)
आयुक्त एवं सचिव।

अभिप्रमाणित,

03

3. झारखण्ड अधिविद्य परिषद, रांची द्वारा विज्ञप्ति संख्या 17/2009 दिनांक 19.02.2009 द्वारा मैट्रिक में एक विद्यालय के लिए कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि से परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई।

प्रभात खबर

शुक्रवार, 20 फरवरी, 2009

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुडुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि-1-12/2002-565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय **"कुडुख कथा खोड़हा लुर एड़पा भागी टोली"** डुमरी गुमला के 39 (उन्नचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुडु.ख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि **"तोलोंग सिकी"** से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार
ह./-
(पोलिकार्प तिर्की)
सचिव,
झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09
D.O.P : 20.02.09

4. झारखण्ड सरध्कार द्वारा 25 नवम्बर 2011 को अधिसूचना जारी कर राज्य के 12 भाषाओं को द्वितीय राजभाषा घोषित किया गया है।

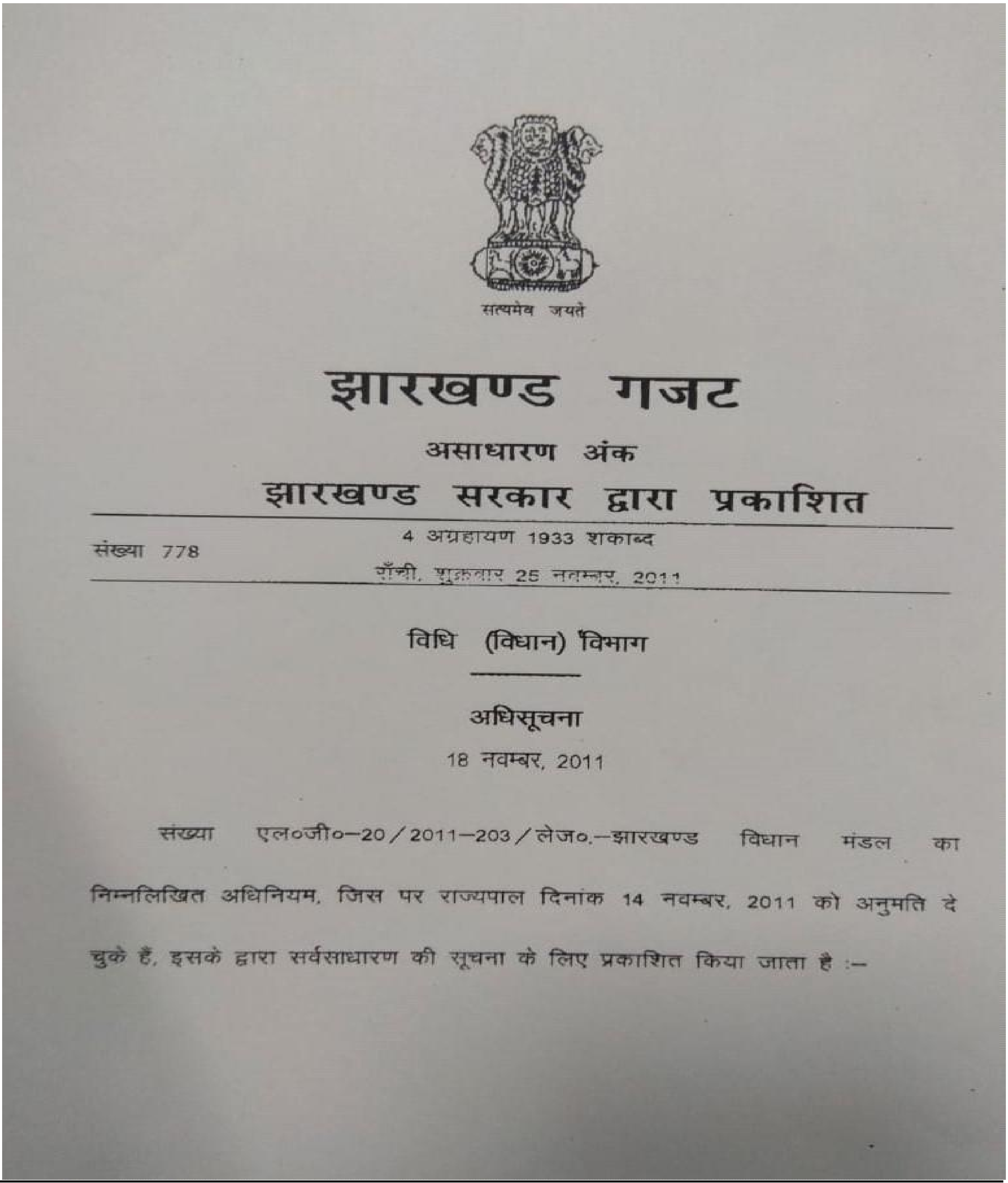

सत्यमेव जयते

झारखण्ड गजट

असाधारण अंक

झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

संख्या 778 — 4 अग्रहायण 1933 शकाब्द

राँची, शुक्रवार 25 नवम्बर, 2011

विधि (विधान) विभाग

अधिसूचना

18 नवम्बर, 2011

संख्या एल०जी०–20/2011–203/लेज०.–झारखण्ड विधान मंडल का निम्नलिखित अधिनियम, जिस पर राज्यपाल दिनांक 14 नवम्बर, 2011 को अनुमति दे चुके हैं, इसके द्वारा सर्वसाधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किया जाता है :–

[झारखण्ड अधिनियम संख्या 29, 2011]

अंगीकृत बिहार राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 2011

झारखंड राज्य के विशिष्ट क्षेत्रों में कतिपय राजकीय प्रयोजनार्थ उर्दू के अतिरिक्त संथाली, बंगला, मुण्डारी, हो, खड़िया, कुडुख (उराँव), कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया तथा उड़िया भाषा को द्वितीय राजकीय भाषा की मान्यता देने के लिए अंगीकृत बिहार राजभाषा अधिनियम, 1950 को संशोधित करने हेतु अधिनियम :--

---

भारत गणराज्य के 62वें वर्ष में झारखण्ड राज्य विधानसभा द्वारा यह निम्नलिखित रूप से अधिनियमित हो —

1. **संक्षिप्त नाम, विस्तार एवं प्रारम्भ :**

   (i) यह अधिनियम "अंगीकृत बिहार राजभाषा (संशोधन) विधेयक, 2011" कहलायेगा।

   (ii) इसका विस्तार राज्य के उन क्षेत्रों में होगा तथा यह उस तारीख से प्रवृत्त होगा, जो राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा नियत करे।

2. **अंगीकृत बिहार अधिनियम--37, 1950 की धारा—3 में उपधारा—3 (क) के रूप में निम्नलिखित उपधारा का जोड़ा जाना—**

   बिहार राजभाषा अधिनियम, 1950 की धारा--3 में उपधारा—3 (क) के रूप में जोड़ी जायेगी—
   "अन्य द्वितीय राजभाषा : राज्य सरकार समय—समय पर राजपत्र में अधिसूचना प्रकाशित कर निर्देश देगी कि उक्त अधिसूचना में निर्दिष्ट क्षेत्र में निर्धारित अवधि के लिए

राज्य के भाषा–भाषियों के हित में संथाली, बंगला, मुण्डारी, हो, खड़िया, कुडुख (उराँव), कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया तथा उड़िया भाषा निर्दिष्ट प्रयोजनार्थ द्वितीय राजभाषा उर्दू के अतिरिक्त प्रयोग की जायेगी।''

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,

पंकज श्रीवास्तव,

सरकार के सचिव–सह–विधि परामर्शी

विधि (विधान) विभाग,

झारखण्ड, राँची ।

अधीक्षक, झारखण्ड राजकीय मुद्रणालय, राँची द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित,
झारखण्ड गजट (असाधारण) 778--150+600 ।

E. झारखण्ड अधिविद्य परिषद, रांची के अधिसूचना संख्या संख्या – **JAC**/गुमला/16095/12– 0607/16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा मैट्रिक में वर्ष 2016 से कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि से परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई।

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

अधिसूचना

संख्या – JAC/गुमला/16095/12 ..../ झारखण्ड अधिविद्य परिषद् की बैठक संख्या 73 दिनांक 23.01.2016 में लिए गए निर्णय के आलोक में कुडुख भाषा की परीक्षा तोलोंग सिकी लिपि में लिखने की अनुमति वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2016 से प्रदान की जाती है।

तोलोंग सिकी लिपि में लिखने वाले परीक्षार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिपि संबंधी कॉलम में "तोलोंग सिकी" अवश्य लिखेंगे।

अध्यक्ष के आदेश से,

12/02/16

सचिव

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : अध्यक्ष के निजी सहायक/उपाध्यक्ष के निजी सहायक/सचिव के निजी सहायक/संयुक्त सचिव के निजी सहायक/उपसचिव के निजी सहायक/गठित समिति के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

12/02/16

सचिव

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड/निदेशक (मा० शि०)' को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ समर्पित।

12/02/16.

सचिव

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

An ISO 9001:2015 certified
किरण कुमारी पासी, भा.प्र.से.
राज्य परियोजना निदेशक

झारखण्ड शिक्षा परियोजना परिषद्
जे.एस.सी.ए. स्टेडियम रोड, सेक्टर–3,
धुर्वा, राँची – 834 004
दूरभाष – 0651-2444501, 2444502, फैक्स – 2444506
ई–मेल: jepcranchi1@gmail.com

पत्रांक : QU/40/147/2021/ 1900 **दिनांक – 30/09/2021**

सेवा में,

जिला शिक्षा पदाधिकारी–सह–जिला कार्यक्रम पदाधिकारी,
जिला शिक्षा अधीक्षक–सह–अपर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी,
पश्चिमी सिंहभूम, गुमला, साहेबगंज, सिमडेगा, लोहरदगा एवं खूँटी,
समग्र शिक्षा अभियान, झारखण्ड ।

विषय : MTB MLE हेतु कार्ययोजना निर्माण के संबंध में।

महाशय / महाशया,

उपर्युक्त विषय के संबंध में कहना है कि NEP 2020 में Mother tongue based Multilingual Education को प्रारंभिक कक्षाओं में प्राथमिकता के स्तर पर लागू करने का सुझाव दिया गया है। आप सभी अवगत है कि झारखण्ड राज्य में मुख्य रूप से 05 भाषा यथा–संथाली, हो, मुण्डारी, कुडुख एवं खडिया भाषा भाषी के विद्यार्थी विद्यालयों में है। हम सभी इस बात से अवगत है कि यदि बच्चों के साथ प्रारंभिक स्तर पर उनके भाषा में बातचीत करते है तो इसका सकारात्मक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है तथा विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के सीखने की गति भी तीव्र होती है। NEP 2020 में भी इन्हीं मुद्दो को विशेष बल दिया गया है तथा बच्चों के मातृभाषा को विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक श्रेणी में इसे अनुपालित करने का सुझाव दिया गया है। उक्त आलोक में विभागीय सचिव के साथ हुये समीक्षा बैठक में इसे कुछ विद्यालयों में लागू करने पर सहमति बनी है जिसमें विद्यालय के चयन का मुख्य आधार चयनित विद्यालयों के विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों तथा आम समुदाय के साथ विचार विमर्श एवं साझा समझ के आधार पर ही लागू किये जाने का निर्णय लिया गया है। विदित हो कि विगत वर्ष राज्य परियोजना कार्यालय की ओर से विद्यालयों की सूची संग्रहित की गयी है जिसमें किसी भी अन्य भाषा के 70 प्रतिशत या उससे अधिक बच्चे नामांकित है। ऐसे विद्यालयों की सूची भाषावार एवं जिलावार पत्र के साथ संलग्न है।

विद्यालय प्रबंध समिति एवं विद्यालय के पोषक क्षेत्र के आम समुदाय के साथ विचार विमर्श तथा NEP 2020 के अनुरूप मातृभाषा को प्राथमिक स्तर पर पठन–पाठन हेतु अपनाने के लिये संवेदनशील बनाना तथा समुदाय से इस मांग को सृजित करने हेतु निम्नवत कार्य किया जाना अपेक्षित होगा –

1. जिला प्रभाग–प्रभारी (एस.एम.सी.) के नेतृत्व में एक समिति जिला स्तर पर गठित की जाये।
2. उक्त समिति में चयनित प्रखण्ड के प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, प्रखण्ड कार्यक्रम पदाधिकारी, दो बी.आर.पी., चयनित विद्यालयों के संकुल के सी.आर.पी. तथा चयनित विद्यालयों में से कम से कम 05 विद्यालयों के 1–1 शिक्षक को शामिल किया जाये।
3. समिति का गठन एवं उन्मुखीकरण माह अक्टूबर, 2021 के प्रथम सप्ताह में अनिवार्य रूप से आयोजित की जाये।
4. समिति का एक दिवसीय उन्मुखीकरण आयोजित किया जाये। इस उन्मुखीकरण में युनिसेफ के परामर्शी एवं जे.सी.ई.आर.टी. प्रतिनिधि भाग लेंगे तथा समिति के साथ पूरे कार्यक्रम की कार्ययोजना तैयार की जायेगी।
5. समिति द्वारा चयनित विद्यालयों के पोषक क्षेत्र में विद्यालय प्रबंध समिति तथा आम समुदाय एवं शिक्षकों के साथ बैठक आयोजित की जायेगी।
6. समिति द्वारा समाज के अन्य प्रबुद्ध लोगो की सहायता प्राप्त की जायेगी।

An ISO 9001:2015 certified
किरण कुमारी पासी, भा.प्र.से.
राज्य परियोजना निदेशक

झारखण्ड शिक्षा परियोजना परिषद्
जे.एस.सी.ए. स्टेडियम रोड, सेक्टर–3,
धुर्वा, राँची – 834 004
दूरभाष – 0651-2444501, 2444502, फैक्स – 2444506
ई–मेल: jepcranchi1@gmail.com

7. समुदाय के साथ बैठक में इस बात का ध्यान रखा जाये की समुदाय मातृभाषा के महत्ता को समझते हुये मातृभाषा को पठन–पाठन में प्रथम माध्यम के रूप में अपनाने पर अपनी सहमति/मांग व्यक्त करे।
8. पत्र के साथ विद्यालयों की सूची संलग्न है परन्तु समिति इसमें आवश्यकतानुसार संशोधन कर सकती है।
9. चयनित विद्यालयों के पोषक क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार बैठक का आयोजन दिनांक 25 अक्टूबर, 2021 तक पूर्ण की जाये।
10. बैठक के पश्चात् समिति द्वारा अंतिम रूप से विद्यालयों की सूची तैयार की जायेगी तथा विद्यालयवार मातृभाषा को प्रथम भाषा के रूप में लागू करने संबंधी कार्ययोजना का निर्माण करेगी। कार्ययोजना का समेकित प्रतिवेदन राज्य परियोजना कार्यालय को दिनांक 30 अक्टूबर, 2021 तक प्रेषित करना अनिवार्य होगा।

यूनिसेफ एवं जे.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधियों की विवरणी

क्र.सं.	नाम	आवंटित जिला	मो0न0
1	श्रीमती पल्लवी शाह, यूनिसेफ	पश्चिमी सिंहभूम	9905150518
2	श्री हर्ष वर्मा, यूनिसेफ	गुमला	7368064065
3	श्री रोहित राज, यूनिसेफ	साहेबगंज	9065930999
4	श्री संजीव तिवारी, यूनिसेफ	सिमडेगा	9199098743
5	श्री अशोक कुमार, जे.सी.ई.आर.टी.	लोहरदगा	7463953245
6	श्री संगीता कुमारी, जे.सी.ई.आर.टी.	खूँटी	8969149198

अनुलग्नक – यथोक्त।

विश्वासभाजन,
20/9/21
(किरण कुमारी पासी)
राज्य परियोजना निदेशक

ज्ञापांक : QU/40/147/2021/ 1800 **राँची, दिनांक : 30/09/2021**

प्रतिलिपि :

1. संबंधित प्रतिनिधि, जे.सी.ई.आर.टी., राँची को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ प्रेषित।
2. श्रीमती पारूल शर्मा, शिक्षा विशेषज्ञ/संबंधित परामर्शी, यूनिसेफ, झारखण्ड को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ प्रेषित।

(किरण कुमारी पासी)
राज्य परियोजना निदेशक

G. कुँड़ुख़ भाषा–तोलोंग सिकि विषयक, विभागीय एवं राजकीय सम्मान

दिनांक 28.10.2011 को, कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा माननीय मंत्री श्री सुदेष महतो के कर कमलों, डॉ. नारायण उराँव को कला/संस्कृति/साहित्यि के क्षेत्र में उनके सराहणीय योगदान एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए सांस्कृतिक सम्मान 2011–12 प्रदान किया गया।

दिनांक 30.09.2016 को, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (कोल इंडिया लिमिटेड का एक अंग), राजभाषा विभाग, कोयला भवन, धनबाद–826005 द्वारा डॉ. नारायण उराँव को कुडुख़ भाषा एवं साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए बीसीसीएल कोयला भारती राजभाषा सम्मान, वर्ष–2016 प्रदान किया गया।

दिनांक 02.04.2019 को, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ब्राहम्बे, राँची द्वारा, आदिवासी महोत्सव–2019 के अवसर पर राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष डॉ. नन्द कुमार साय के कर कमलों डॉ. नारायण उराँव को उनके साहित्यिक सेवा (कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग सिकि विकसित करने) के लिए प्रशस्ति पत्र एवं षॉल प्रदान किया गया।

राजधानी

हिन्दुस्तान • रांची • शनिवार • 29 अक्तूबर 2011

विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी हस्तियां, जिन्हें सरकार ने सम्मानित किया। • हिन्दुस्तान

डॉ केसरी को भी मिला लाइफ टाइम अवार्ड

रांची। राज्य सरकार ने शुक्रवार को कला केंद्र [illegible] में कला संगीत और साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को सम्मानित किया। इसके तहत कला, संस्कृति, भाषा, संगीत और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित होने वालों में डॉ. रामदयाल मुंडा के साथ-साथ डॉ. बीपी केसरी को राज्य सरकार की ओर से लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया।

इससे पहले डा केसरी को भी 50 हजार का चेक और सम्मान पत्र के साथ दोशाला दिया गया। इनके अलावा 20 अन्य विशिष्ट लोगों को राजकीय सम्मान दिया गया। राजकीय सम्मान पाने वाले लोगों को 10-10 हजार रुपये, सम्मान पत्र के साथ दोशाला भेंट किया गया। उप मुख्यमंत्री महतो, विधायक कमल किशोर भगत, डा. देवशरण भगत, डा. बहादुर सिंह ने सबको सम्मानित किया। लोगों ने कहा कि डॉ मुंडा इसके हकदार थे।

नाम	क्षेत्र
डा. भुवनेश्वर अनुज	साहित्य, इतिहास, शिक्षा एवं पत्रकारिता
डा. श्रवण गोस्वामी	साहित्य, मंचन, लेखन और पेंच
रोजलीन लकड़ा	नाटक, रेडियो में सुनिधि बहन के चरित्र से प्रसिद्धि
बीजू टोप्पो	झारखंडी एवं कुड़ुख फिल्म निर्माण
मेघनाथ	झारखंड पर विशेष फिल्म निर्माण (अनुपस्थिति के कारण पत्नी कांता तिर्की ने सम्मान ग्रहण किया)
सविता मिश्रा	ओडिसी नृत्य
साहनी उपेंद्र पाल नाहन	नागपुरी साहित्य, विविध विधाओं में लेखन एवं कवि
डा. गिरधारी राम गौंझू	साहित्य, इतिहास, संस्कृति, एवं सामाजिक पत्रकारिता, शिक्षा(अनुपस्थिति के कारण भाई शंकरलाल ने सम्मान लिया)
डा. रामकुमार तिवारी	खोरठा, नृत्य, संगीत, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, भूगोल एवं पर्यावरण
डा. कमल कुमार बोस	हिन्दी साहित्य एवं रंगकर्म
कुमकुम गौड़	टीवी एवं रेडियो में अभिनय
चंद्र मोहन खन्ना	अभिनय एवं नाट्यकला
डा. केसी टुडू	भाषाविद्, संथाली साहित्य और शिक्षा
डा. हरि उरांव	भाषाविद्, उरांव साहित्य, शिक्षा
डा. भुवनेश्वर सवैया	हो भाषा साहित्य, संस्कृति एवं पत्रकारिता (अनुपस्थित रहे)
प्रो. मनोज मुर्मू	लेखन विशेषकर संथाली भाषा एवं साहित्य एवं शब्द कोष
दीनबंधु ठाकुर	लोक नर्तक, गायक एवं नृत्य प्रशिक्षक
डा नारायण उरांव सैंदा	चिकित्सा, कुड़ुख लिपि अनुसंधान
चुना राम हेंब्रम	प्रसिद्ध चित्रकार
पांडेया मुंडा	सिंगुआ छऊ गुरु देश विदेश में प्रस्तुति(अनुपस्थित)

पांडेय और सवैया का सम्मान पत्र ईस्टजोन कल्चरल सोसाइटी के कमल कुमार बोस ने लिया।

धनबाद, शनिवार

प्रभात खबर धनबाद अपडेट 1.10.2016

आज अंतराष्ट्रीय भाषा बन गयी है हिंदी : डीपी

धनबाद. हिंदी आज अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है. राजभाषा पखवारा आयोजन का उद्देश्य है कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने का है, ताकि इसका प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक हो सके. उक्त बातें बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) विनय कुमार पंडा ने कही. वह शुक्रवार को कोयला नगर स्थिति सामुदायिक केंद्र में आयोजित बीसीसीएल राजभाषा पखवारा समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे. मौके पर मुख्य अतिथि कथाकार नारायण सिंह, विशिष्ट अतिथि सह कुडुख भाषा विशेषज्ञ डॉ नारायण उरांव आदि थे. कंपनी की ओर से दोनों को कोयला भारती राजभाषा सम्मान दिया गया. पूरे पखवारा के विजयी प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया. मौके पर निदेशक (वित्त) केएस राजशेखर, मुख्य महाप्रबंधक (समन्वय) आरएन प्रसाद, महाप्रबंधक (कुसुंडा) देवेंद्र प्रसाद, महाप्रबंधक (लोदना) पी चंद्रा, महाप्रबंधक (बस्ताकोला) पीके दुबे, महाप्रबंधक (सिविल) आरएम प्रसाद, महाप्रबंधक (खनन) ज्योतिष चंद्र व एसके सिंह, बी सिंह, आरआर प्रसाद के अलावा बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे.